सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 19 • अंक 8 • नवम्बर 2022 • मूल्य : 20 रु.

दादागुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि जन्मतिथि

दिनांक 11 नवम्बर

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य

श्री जिनकांतिसागरसूरि जी म.सा.

पुण्यतिथि दि. 15 नवम्बर

अनन्त अनन्त वंदना एवं भावांजलि

जयपुर में सूरिमंत्र साधना प्रारंभ महोत्सव

मुख्य लाभार्थी श्री चन्द्रप्रकाश जी प्रकाशचंद जी लोढ़ा परिवार जयपुर

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

अप्पत्तियं जेण सिया आसु कुप्पेज वा परो।
सव्वसो तं न भासेज्जा भासं अहियगामिणि।।

जिस भाषा से अप्रीति और अविश्वास उत्पन्न हो या और कोई शीघ्र कुपित हो ऐसी अहितकर भाषा सर्वथा नहीं बोलनी चाहिए।

One should never utter such harmful words as may create displeasure or distrust in others, or by hearing which others may immediately lose their temper.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	आलंदी	05
3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	अक्कलकुवा (दादावाड़ी)	06
4. विहार डायरी	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
5. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	10
6. गोत्र इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	12
7. प्रिय आत्मन्	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	13
8. मेरी मंगल कामना !	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	15
9. मृत्यु को महोत्सव बना दिया	पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	16
10. समाचार दर्शन	संकलित	20
11. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	34

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 19 अंक : 8 5 नवम्बर 2022 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष – उत्तमचंद रांका, चैन्नई

प्रधान संपादक : श्रीमती पुष्पा ए. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653
रुपये जमा कराने के बाद पेढ़ी में सूचना देना अनिवार्य है।

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
मोबईल : 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

विशेष दिवस

- 5 नवंबर श्री अरनाथ केवलज्ञान कल्याणक
- 7 नवंबर चातुर्मासिक प्रतिक्रमण
- 8 नवंबर कार्तिक पूर्णिमा, सिद्धाचल तीर्थ यात्रा, अस्वाध्याय दिवस
- 9 नवंबर अस्वाध्याय दिवस
- 10 नवंबर रोहिणी
- 11 नवंबर दादा श्री जिनकुशलसूरि 742वीं जन्म तिथि
- 13 नवंबर श्री सुविधिनाथ जन्मकल्याणक, पुष्य नक्षत्र प्रारम्भ शाम 4.28
- 14 नवंबर श्री सुविधिनाथ दीक्षा कल्याणक, पुष्य नक्षत्र समाप्त रात्रि 6.48
- 15 नवंबर आ. श्री जिनकान्तिसागरसूरि 36वीं पुण्यतिथि, जहाज मंदिर, माण्डवला
- 19 नवंबर श्री महावीर स्वामी दीक्षा कल्याणक
- 20 नवंबर श्री पद्मप्रभ मोक्ष कल्याणक
- 23 नवंबर पाक्षिक प्रतिक्रमण
- 27 नवंबर आ. श्री जिनयश:सूरि पुण्यतिथि, पावापुरी
- 2 दिसंबर श्री अरनाथ जन्म एवं मोक्ष कल्याणक,
- 3 दिसंबर मौन एकादशी, श्री अरनाथ दीक्षा कल्याणक, श्री मल्लिनाथ जन्म-दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक, श्री नमिनाथ केवलज्ञान कल्याणक

विज्ञापन हेतु ट्रस्टी श्री गौतम बी. संकलेचा चेन्नई से संपर्क करावे मोबाइल नंबर 94440 45407

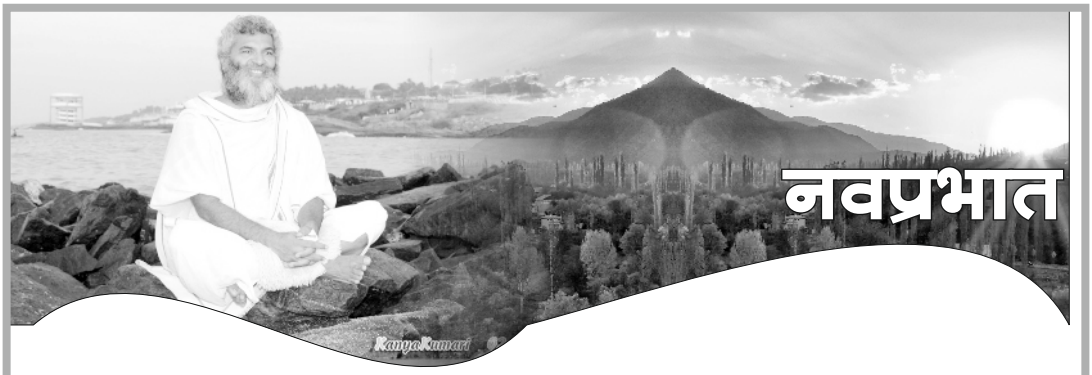

दीपावली के क्षणों में इन पंक्तियों को लिख रहा हूँ।

परमात्मा महावीर का निर्वाण हुआ। उनकी पावन स्मृति दीपावली का निमित्त बनी।

यह महापर्व हमें प्रसन्नता से भरता है, पर कैसी प्रसन्नता!

बाहरी प्रसन्नता का अनुभव तो करते आये हैं।

नये वस्त्र धारण करते हैं... मिष्टान्न का उपयोग करते हैं...

प्रकाश के कृत्रिम साधनों का प्रयोग करते हैं।

पर आज मैं पीडा का भी अनुभव कर रहा हूँ।

मैं 2549 वर्ष पूर्व की उन घडियों के वातावरण में पहुँचता हूँ!

जब मेरे परमात्मा मौन हो गये...! उन्होंने निर्वाण पा लिया।

परमात्मा की आत्मा तो मुक्त ही थी। उनका रहना भी आनंद का आधार था... निर्वाण भी आनंद का पर्याय बना!

पर मेरा क्या होगा? मुझे कौन सहारा देगा? मुझे कौन धर्म का प्रत्यक्ष बोध देगा?

इस दशा का अनुभव जो गणधर गौतमस्वामी ने किया। उस दशा का अनुभव हृदय में प्रकट हुआ है।

ऐसा अनुभव तभी हो सकता है, जब भावों से हम गौतमस्वामी को अपने अन्तर में प्रकट करते हैं।

श्रीमद् देवचन्द्रजी म. ने अपनी व्यथा को इन शब्दों में प्रकट किया है–

नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ।

हमारी दशा ऐसी ही हो गई है जैसे किसी सेना की दशा सेनापति के अभाव में होती है।

मैं परमात्मा महावीर के पास उनके मंदिर में बैठा हूँ। परमात्मा मौन है पर मैं उनकी देशना का अनुभव कर रहा हूँ।

तब लगता है, परमात्मा मेरे पास है। मेरे हृदय में है। मेरी आत्मा के हर अणु में विद्यमान है। और इस अनुभव से मेरी पीडा प्रसन्नता में बदल गई।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 41

आलंदी

–मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
– साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

भरत खण्ड में अनेक सभ्यताओं तथा संस्कृतियों का देश भारतवर्ष अनादिकाल से संतों और युगपुरुषों की कर्मभूमि रहा है। भारतवर्ष के दक्षिण पश्चिम में पुण्य नगरी पुणे के पास देवराज इन्द्र की तपोभूमि आलंदी एक पवित्र क्षेत्र है जो श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र बिन्दु है। राजस्थान प्रदेश के बड़ी संख्या में जैन धर्मावलम्बी महाराष्ट्र आकर बसे हैं। अपने साथ वे अपनी धर्म संस्कृति भी लाये हैं। महान चमत्कारिक प्रकट प्रभावी श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ एवं श्री नाकोड़ा भैरव देव के नित्य स्मरण की दृष्टि से भक्तों ने आलंदी-मरकल रोड पर मेवानगर की बसावट कर अपनी दिली इच्छा को पूर्ण करने का प्रयास किया है।

वारकरी-ब्राह्मण समुदाय की बहुतायत के साथ पुणे से 20 कि.मी. दूर आलंदी देवाची की जनसंख्या लगभग 50000 है। संत श्रेष्ठ श्री संत ज्ञानेश्वर की जीवित समाधि भूमि वाले इस नगर की गणना महाराष्ट्र के तीर्थ स्थानों में दूसरे क्रमांक के श्री क्षेत्र के रूप में होती है। यहाँ 65 जैन परिवार बसते हैं।

श्री नाकोड़ा जैन मंदिर नाम से यहाँ लघु तीर्थ परिसर बसाया गया है, जिसमें दो मंज़िले अनुपम शिल्पकलायुक्त शिखरबद्ध जिनालय के साथ-साथ अधिष्ठायक देव नाकोड़ा भैरव का अलग विशाल देवालय, साधु-साध्वी उपाश्रय, कायमी भोजनशाला एवं अतिथि भवन की व्यवस्था की गई है।

जिनालय के पहले माले पर श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ प्रभु की 19 इंच चौड़ी श्वेत प्रतिमा जी प्रतिष्ठित हैं। गंभारे के तिगड़े में आजू-बाजू मुनिसुव्रतस्वामी एवं आदिनाथ प्रभु की श्यामवर्णीय प्रतिमायें विराजमान हैं। गंभारे के आगे आमने-सामने देखते दो गोखलों में पार्श्वयक्ष एवं पद्मावती माता की मूर्तियाँ हैं।

पश्चिममुखी जिनालय के रंगमंडप के गुम्बद में सुन्दर खुदाई कार्य किया हुआ है। रंगमंडप के आगे तोरण युक्त छतरी से दायें-बायें दोनों तरफ उतरती सीढ़ियाँ हैं।

तल माले के गंभारे में तीन प्रभु प्रतिमायें हैं। मूलनायक वासुपूज्यस्वामी हैं। गंभारे के बाहर गोखलों में गणधर पुण्डरीकस्वामी एवं गौतमस्वामी प्रतिष्ठित हैं।

इस तलमाला जिनालय के रंगमंडप में दादा गुरूदेव को प्रतिष्ठित कर इसे अप्रत्यक्षत: दादावाड़ी का रूप दिया गया है।

मूलनायक प्रभु के दाहिने प्रथम गोखले में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वर जी की आभामण्डल युक्त 17 इंच ऊँची 11.5 इंच चौड़ी प्रतिमा प्रतिष्ठित है। सफेद मकराना पाषाण में निर्मित दादा गुरुदेव बिम्ब की आभामण्डल सहित ऊँचाई 45 से.मी. है।

इस जिनालय-दादावाड़ी की प्रतिष्ठा माह सुद 6

संवत् 2059 दिनांक 7.2.2003 को हुई।

आयताकार रंगमंडप में दोनों तरफ जिनालय प्रवेश द्वार है। दो गोखलों में दक्षिणमुखी श्री भोमिया जी एवं उत्तरमुखी श्री नाकोड़ा भैरव अधिष्ठायक देवों की मूर्तियाँ लगी हैं।

रंगमंडप में मूलनायक गंभारे के सामने वाली दीवार में देव श्री मणिभद्रवीर एवं श्री घंटाकर्ण महावीर की मूर्तियाँ विराजमान हैं।

इस जिनालय का निर्माण एक तीर्थ क्षेत्र के रूप में किया गया है। रविवार व पूर्णिमा को लगभग 200-300 दर्शनार्थी आते हैं।

आलंदी का बस स्टैण्ड जिनालय से मात्र आधा कि. मी. दूर है। परन्तु निकटवर्ती रेलवे स्टेशन पुणे 20 कि.मी. एवं हवाई अड्डा पुणे 15 कि.मी. की दूरी पर है।

जलाराम बापा एवं संतोषी माता के प्रभावी मंदिर यहाँ हैं। शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय यहाँ से आधा कि. मी. दूर है। कात्रज तीर्थ की दूरी 30 कि.मी. है। श्री पद्मणी तीर्थ, पाबल एवं श्री पार्श्व प्रज्ञालय, तलेगाँव क्रमशः 32 एवं 35 कि.मी. की दूरी पर हैं।

यह दादावाड़ी भक्ति और शक्तिपीठ का अनोखा संगम है। यहाँ अस्पताल, रिसर्च लाइब्रेरी, स्कूल आदि निर्माण की योजना है।

❋

पता : श्री नाकोड़ा भैरव राजस्थान जैन मंदिर,
मेवा नगर- आलंदी - मरकल रोड, तालुका - खेड़, जिला पुणे (महाराष्ट्र)

अक्कलकुवा-दादावाड़ी परिचय - 42

बीस हज़ार की आबादी वाले अक्कलकुवा नगर की हनुमान गली में भव्य शिखरबद्ध मंदिर स्थित है, जिसमें मूलनायक के रूप में वासुपूज्य भगवान विराजमान हैं। मूलनायक प्रभु के दायीं-बायीं तरफ विमलनाथ भगवान एवं चंद्रप्रभ स्वामी भी विराजमान हैं।

रंगमंडप में एक आकर्षक गोखला निर्मित किया गया है, जिसमें दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वर जी म.सा. की श्वेत वर्ण की प्रवचन मुद्रा में मनमोहक प्रतिमा प्रतिष्ठित है। प्रतिमा के पीछे की दीवार में सुंदर रंगों से आभामण्डल बना हुआ है।

प्रतिमा के आगे दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वर जी म.सा. की चरण पादुका स्थापित है, जो पंचधातु में निर्मित होने से उसका स्वर्ण वर्ण अति आकर्षक प्रतीत होती है।

गाँव से मात्र आधा कि.मी. दूर लगभग दस हज़ार वर्ग फीट का विशाल भूखण्ड श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी बनाने के लक्ष्य से डागा परिवार ने सकल श्री संघ को समर्पित किया, जिसका खात मुहूर्त एवं शिलान्यास पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. द्वारा प्रदत्त मुहूर्त्त में पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में सम्पन्न हो चुका है।

गाँव के 50 घर मंदिरमार्गी परम्परा के हैं और 35 घर स्थानकवासी परम्परा के हैं परन्तु दोनों परम्पराओं में पारस्परिक सौहार्द्र भाव अपने आप में एक इतिहास है।

साधु-साध्वी जी के ठहरने के लिए उपाश्रय,

प्रवचन हॉल आदि निर्मित है। जैन धर्मशाला एवं वर्धमान स्थानकवासी भवन भी आगंतुकों के लिए सुविधाप्रद है। यहाँ की श्राविकाएँ प्रतिदिन बच्चों को धार्मिक अध्ययन करवाती हैं। प्रति पूर्णिमा को दादा गुरुदेव की पूजा पढ़ाई जाती है।

गाँव से 90 कि.मी. की दूरी पर श्री विमलनाथ प्रभु का अतिप्राचीन महिमावंत श्री बलसाणा तीर्थ एवं 100 कि.मी. की दूरी पर आदिनाथ प्रभु का झगड़िया जी तीर्थ स्थित है।

पता : श्री जैन श्वेताम्बर वासुपूज्य मंदिर,

हनुमान गली, पो. अक्कलकुवा - 425 415, जिला : नंदुरबार (महाराष्ट्र) दूरभाष : 02567-252124

मंदिर में पूजा विधि का आध्यात्मिक महत्त्व

ध्वजा देखकर - नमो जिणाणं, जिनशासन जय हो,
तिलक करके - जिन आज्ञा मस्तके हो,
परमात्मा देखकर - परमात्मा के जैसे ही बुद्ध, शुद्ध, सिद्ध बनूं (परमात्मा के गुण मुझमें समाये),
जल पूजा करके - मेरी आत्मा के सारे दोष धुल जाये, आतम निर्मल बने,
चंदन पूजा करके - चंदन की तरह शीतल बनूं, क्रोध त्याग दूं,
परमात्मा के चरण स्पर्श करके - विनम्र बनूं,
परमात्मा के घुटने स्पर्श करके - काउस्सग ध्यान धरूं,
हाथों को स्पर्श करके - दर्शन ज्ञान चारित्र का दान मिले,
कंधे का स्पर्श करके - सारी शक्ति जिनशासन की सेवा के लिये ही हो,
मस्तक शिखा - परम पद मोक्ष मिले,
मस्तक ललाट स्पर्श करके - तीनों भुवन के तिलक समान तीर्थंकर ही मात्र मेरे स्वामी है, परमात्मा की जय हो,
कंठ पर स्पर्श करके - समोवसरण मे 48 घंटे देशना देने वाले तीर्थंकर परमात्मा के वचन पर ही 100% श्रद्धा हो,
हृदय - राग द्वेष रहित हृदय वाले परमात्मा मेरे हृदय में भी बिराजे,
नाभि - उज्ज्वल नाभि कमल वाले तीर्थंकर जैसा मेरा भी तप हो,
9 अंग पूजा करके - 9 तत्त्व को पहचानूं,
फुल चढाकर - (प्रेम का प्रतीक) फुल की तरह मैं अपने आप को सम्पूर्ण परमात्मा को समर्पित हो जाऊं,
धूप देखकर - राख बनने वाले शरीर को भुलकर (कष्ट सहन करके) मेरी शुद्ध आत्मा चारों ओर सुगंध फैलाए,
दीपक - अज्ञान का अंधेरा दूर हो,
मेरी आत्मा में ज्ञान और श्रद्धा की ज्योति रहे,
दीपक के लौ के समान आत्मा उन्नति करे,
अक्षत - चावल को उगाने पर सीधे ही वे नहीं उगते, वैसे ही मुझे भी बार-बार जन्म ना लेना पडे,
साथिया - देव, नारक, तिर्यंच, मनुष्य चार गति के फेरे मिटे, साथीया मंगल का प्रतीक है, चारों गति के समस्त जीवों का मंगल कल्याण हो,
तीन ढगली - दर्शन ज्ञान चारित्र तीनों रत्न मिले,
सिद्धशिला - सभी जीव मोक्ष पद पावे,
मिठाई - सारे भोग विलास का त्याग करूं,
फल - सभी जीव सिद्धशिला पर विराजमान हो, मोक्ष फल पाये,
दर्पण - परमात्म सिद्ध स्वरूप को पाऊं,
चामर - चारों दिशाओं में जिनशासन की जय हो (परमात्मा का दास बन जाऊं),
घंट बजाकर - परमात्मा की भक्ति के आनंद की गुंज देवलोक तक सुनाई दें।

132

विहार डायरी

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

(गतांक से आगे)

हम छह साधुओं व साध्वी रत्ना श्री प्रकाशश्रीजी म. पूजनीया माताजी म. बहिन म. आदि ठाणा 10 कुल सोलह साधु साध्वीजी म. ने ता. 7 मई 2004 को हुबली नगर में प्रवेश किया था। यहाँ के श्री संघ की विनंती बहुत थी। इधर काफी घर सिवांची पट्टी, बाडमेर क्षेत्र के थे। पर हमारा ज्यादा रुकना संभव नहीं था। क्योंकि कोट्टूर पहुँचना था। जहाँ दादावाडी की प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त्त दिया जा चुका था। साथ ही पेद्दतुम्बलम् पार्श्व मणि तीर्थ में एक बालिका की दीक्षा कराने का मुहूर्त्त भी दे दिया था। विहार लगातार हो रहे थे। हुबली में मात्र तीन दिनों का प्रवास रहा।

हुबली में प्रवेश करते ही अतीत की घटनाऐं आंखों के सामने उभर आई। मेरा, बहिन विद्युत्प्रभा का रोम-रोम जैसे दर्द से भीग गया था। मेरा हुबली में पहली बार आना हो रहा था। मेरे दादाजी, पिताजी का व्यापार यहीं पर फैला हुआ था। यह नगर हमारे परिवार की कर्मभूमि थी। मेरे पिताजी का स्वर्गवास इसी नगर में हुआ था। उनके स्वर्गवास के समय मेरी उम्र चार साल की और बहिन विद्युत्प्रभा की उम्र छह महिने की थी।

उनके पेट में छाले हो गये थे। इस कारण पेट में दर्द था। मालिश वाले ने पेट की मालिश की थी। इस कारण छाले अन्दर ही अन्दर फूट गये थे। जहर पूरे शरीर में फैल गया था। डॉक्टर ने बहुत प्रयत्न किया था। पर इलाज कारगर साबित नहीं हुआ था।

जिस डॉक्टर ने उनका इलाज किया था। उनसे मिलना हुआ। उन्हें पिताजी की घटना आज भी याद थी। अभी मेरे सांसारिक बडे पिताजी श्री जीवराजजी का परिवार यहाँ रहता है। प्रकाश, गौतम, रमेश यहीं व्यापार करते हैं। प्रकाश के घर उसकी विनंती पर चतुर्विध संघ के साथ मांगलिक हेतु जाना हुआ था।

तीन दिनों के प्रवास में एक दिन हुबली के गच्छ के श्रावकों की मीटींग बुलाई थी। और यहाँ दादावाडी बनाने की प्रेरणा दी थी। नाम भी लिखे गये थे। राशि भी लिखी गई थी। मीटींग में कमेटी भी बनाई गई थी। रजिष्टर में उनके नाम लिखे गये थे। पर हमारे विहार के बाद बात जैसे आई गई हो गई। उस समय का प्रयास परिणाम न ला सका।

बाद में गणिनी प्रवरा साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से सुविशाल जिन मंदिर, दादावाडी, उपाश्रय, धर्मशाला आदि का निर्माण हुआ। जिसकी प्रतिष्ठा इचलकरंजी चातुर्मास के बाद सन् 2015 में संपन्न हुई।

हुबली के त्रिदिवसीय प्रवास में ता. 8 मई को श्री अजितनाथ जैन श्वे. गुजराती मंदिर में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि के चित्रपट्ट को बिराजमान किया गया।

यहाँ की यादों को साथ में लेकर विहार कर ता. 18 मई को कोट्टूर पहुँचे। गढ़सिवाना के काफी परिवार यहाँ निवास करते हैं। चौमुख परमात्मा का मंदिर है। यहाँ के श्री संघ में तपागच्छ व खरतरगच्छ के घर हैं। मंदिर श्री संघ का है। जबकि दादावाडी जो कि मंदिर के पास ही निर्मित हुई है, वह खरतरगच्छ श्री संघ द्वारा निर्मित है।

प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ 17 मई से ही हो गया था। उत्साह गजब का था। जैनों में जितना उत्साह और उल्लास था, उससे ज्यादा वहाँ की आम जनता में था। यह देखकर हृदय गद्‌गद् हो रहा था।

कोट्टूर का सुप्रसिद्ध मठ चालुकोटि के अध्यक्ष श्री सिद्धलिंग शिवाचार्य की अध्यक्षता में सर्व धर्म अनुयायियों की एक विशाल बैठक इस प्रतिष्ठा के संबंध में बुलाई गई

थी। जिसमें सभी ने इस प्रतिष्ठा में सहभागी बनने की इच्छा अभिव्यक्त की थी। श्री शिवाचार्य ने उस समय जैन समुदाय के प्रति अपना प्रेम अभिव्यक्त करते हुए कहा था- यहाँ का जैन समाज समस्त जनता के सुख-दु:ख में सहभागी बनता है। तो यह प्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल जैन समाज का नहीं है, अपितु हमारा भी है।

यहाँ के पूर्व विधायक श्री बी.एस. वीरभद्रप्पा भी इस बैठक में उपस्थित थे। और उन्होंने भी समस्त समुदायों से सहयोग का आह्वान किया था।

प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु नव दिवसीय समारोह का आयोजन था। प्रतिष्ठा 24 मई को थी। वरघोडा 23 मई को था। दोनों दिन गाँव के सारे कत्लखाने पूर्ण रूप से बंद किये गये थे। शराब की सारी दुकानें बंद की गई थी। सरकार द्वारा इस प्रतिष्ठा के निमित्त जारी इस आदेश का गांव वालों ने पूर्ण रूप से पालन किया था।

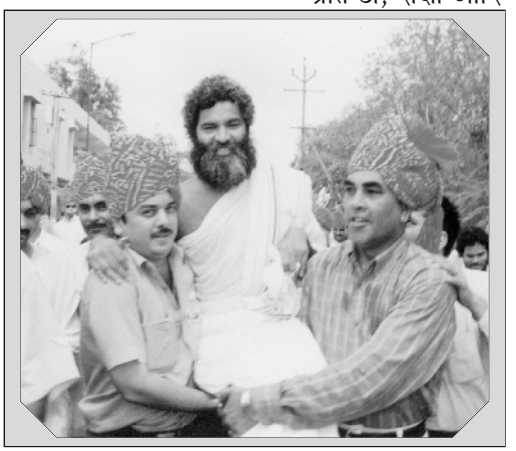

प्रतिष्ठा के वरघोडे में स्थानीय अजैन समाज का उल्लास हृदय में परम आनंद भर रहा था।

24 ता. को फलेचुन्दडी का आयोजन था जिसमें कोट्टूर और आसपास के गांव वाले बडी संख्या में पधारे थे। लगभग 25-30 हजार लोगों का भोजन था।

ट्रस्टी मेरे पास आये थे और कहा था- महाराज साहब! इनकी भोजन व्यवस्था देखने जैसी है। आप एक बार उन्हें आशीर्वाद देने के लिये पधारें।

मैं वहाँ गया था। श्री बाबुलालजी बाफना, प्रकाशजी चौपडा, श्री धारीवालजी आदि काफी लोग मेरे साथ थे। हजारों की भीड पर कोई हो-हल्ला नहीं। कहीं आपाधापी नहीं। सभी पंक्तिबद्ध बैठते। पंक्ति पूरी होने पर भोजन का प्रारंभ होता। प्राय: 10 मिनट में पंक्ति खाली! एक कण भी झूठा नहीं देखा गया। भोजन पूरा होने पर पत्तल उठाते और कचरे के डिब्बे में डाल देते। भोजन बनाने वाले भी वे ही थे और परोसने वाले भी वे ही थे। उनके साथ चर्चा करके भोजन का मीनू तय किया गया था। मुख्य रूप से चावल पर जोर ज्यादा था। दो मिष्ठान्न व दो नमकीन भी परोसे गये थे। महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि भोजन में क्या था? महत्वपूर्ण बात यह है कि वे कितने आदर और अनुमोदना के भावों से भरकर भोजन कर रहे थे।

आयोजन संघ का था। मैंने अपने श्रावकों से कहा था- ये लोग भोजन बिल्कुल भी झूठा नहीं छोडते!

उन्होंने कहा- महाराज! भोजन झूठा छोडने में ये लोग पाप मानते हैं। कभी नहीं छोडते। कुछ बातें इनकी अपने समाज को भी सीखनी चाहिये।

मैंने उनका अनुशासन देखा तो मन में आया- काश! हमारे संघ में भी अनुशासन होता। अपने यहाँ भोजन झूठा छोडने में लोग जरा भी दर्द का अनुभव नहीं करते।

प्रतिष्ठा, दीक्षा आदि धार्मिक कार्यक्रमों में भी धर्म की अवहेलना देखी जाती है। अपने कार्यक्रम में जितना भोजन झूठा जाता है, उतने से कितने ही व्यक्तियों का पेट भर सकता है।

भोजन झूठा न छोडें, इसके लिये मंडल वालों को ड्यूटी पर लगाया जाता है। यहाँ झूठा छोडने का किसी का मन ही नहीं होता। झूठा नहीं छोडना, यह उनके धर्म में शामिल है या नहीं, यह पता नहीं, परन्तु उनके हर सामान्य व्यवहार में शामिल है।

जो लोग झूठा छोडने में आनंद का अनुभव करते हैं, उनको यहाँ के गांव वालों से सीख लेनी चाहिये। प्रतिष्ठा में सनातन धर्म के कई सन्त उपस्थित थे। एक बडे महंत जिनका नाम श्री विद्यारण्यस्वामीजी था, जो प्रतिष्ठा में उपस्थित नहीं थे, का प्रतिष्ठा के एक महिने बाद संघ के नाम पत्र आया कि आपकी दादावाडी की जो प्रतिष्ठा हुई है, उसमें आसपास के समस्त देवी-देवता उपस्थित थे व कृपा बरसा रहे थे। आपकी दादावाडी पर गजराज का आजीवन पहरा होने वाला है। इस कारण कोई वस्तु बाहर नहीं जा सकती।

वे महंत इस क्षेत्र में बडे चमत्कारी माने जाते हैं। प्रतिष्ठा में उपस्थित नहीं थे। पर उन्हें अपनी साधना में जो स्फुरणाऐं हुई, उसी आधार पर उन्होंने यह पत्र लिखा था।

(क्रमश:)

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

खींचन की प्रतिष्ठा के पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री का पुनः फलोदी पधारना हुआ। दो-तीन दिनों की स्थिरता के पश्चात् लोहावट पधारे। लोहावट श्री संघ में मनमुटाव था। बहुत सारे धडे थे। धडे शब्द का अर्थ गुट! बहुत सारे गुट बन गये थे। कारण तो कोई न कोई मिल ही जाता है।

किसी भी विवाद की गहराई में जाओगे तो पाओगे कि विवाद का कारण कोई सिद्धान्त नहीं, अपितु हमारा 'इगो' होता है। और एक बार जब बात पकड ली जाती है, तो फिर मूंछ का सवाल बन कर रह जाती है।

पूज्य गुरुदेवश्री का लोहावट संघ के प्रति अपार प्रेम और अपनत्व था। क्यों न होता, पूज्यश्री के गुरु महाराज यहीं के थे। उनकी कर्मभूमि लोहावट थी। भले उनकी जन्मभूमि रोहिडा थी पर वे सर्वत्र लोहावट के ही कहलाते थे। क्योंकि बचपन से वे यहीं थे।

पूज्य गणनायक श्री भगवानसागरजी म. उनके सांसारिक चाचा थे। बचपन से ही वे उनके पास आ गये थे। हाँलाकि उनकी दीक्षा पूज्य चाचाजी म. के करकमलों से संभव नहीं हो पाई थी। पर उनकी ही अंतिम आज्ञा से पूज्य गणाधीश महातपस्वी श्री छगनसागरजी म. के करकमलों से मात्र साढे सात वर्ष की उम्र में हुई थी।

अपने गुरुदेवश्री की इस कर्मभूमि के प्रति पूज्य गुरुदेवश्री के हृदय में लगाव होना स्वाभाविक था। यहाँ संघ में जब विवाद देखा, तो उन्होंने इसे मिटाने का संकल्प लिया।

अपनी अमृत बहती प्रेम भरी वाणी का ही यह परिणाम था कि सारे विवाद समाप्त हुए। संघ ने एक होकर गीत गाया- **धडे मिटाने वाले, गुरु की जय जय।**

लोहावट के उस दिव्य वातावरण का स्मरण उस समय के लोग आज भी करते हैं। मुंबई चातुर्मास में मुझे श्री सोहनलालजी सा. पारख मिले। उनके पास उस समय के फोटो भी थे। उन्होंने उस समय के वातावरण की विवेचना की थी।

समय के प्रभाव से आज लोहावट गांव में जैन समाज के घर कम खुले हैं। अधिकतर लोग व्यापार हेतु छत्तीसगढ और चेन्नई चले गये। पर उस समय लोहावट भरा पूरा था। जाटावास भी और विसनावास भी!

पधारिये पधारिये अवश्य पधारिये !!!

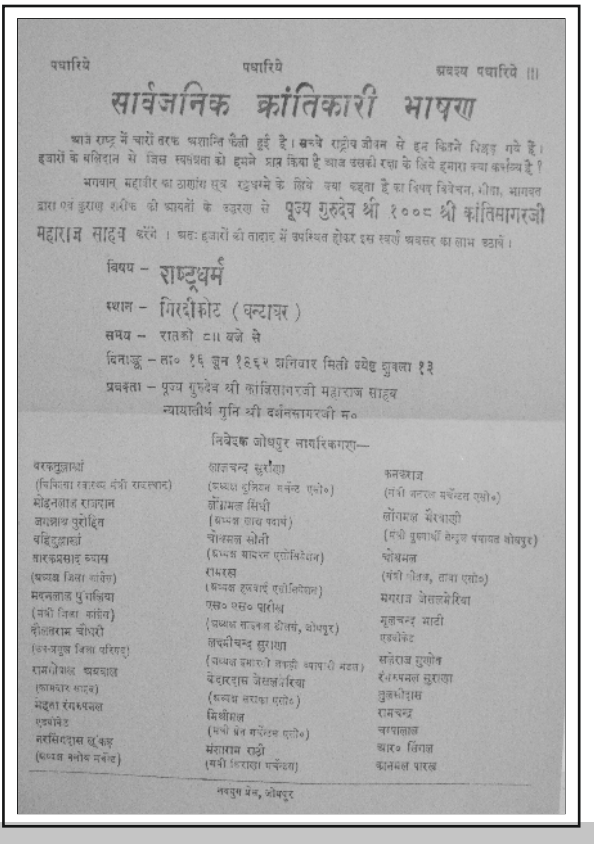

सार्वजनिक क्रांतिकारी भाषण

आज राष्ट्र में चारों तरफ अशान्ति फैली हुई है। सच्चे राष्ट्रीय जीवन से हम कितने पिछड़ गये हैं। हजारों के बलिदान से जिस स्वतंत्रता को हमने प्राप्त किया है आज उसकी रक्षा के लिये हमारा क्या कर्तव्य है?

भगवान महावीर का ठाणांग सूत्र राष्ट्रधर्म के लिये क्या कहता है का विशद विवेचन, गीता, भागवत द्वारा एवं कुराण शरीफ की आयतों के उद्धरण से पूज्य गुरुदेव श्री १००८ श्री कांतिसागरजी महाराज साहब करेंगे। अतः हजारों की तादाद में उपस्थित होकर इस स्वर्ण अवसर का लाभ उठावें।

विषय - राष्ट्रधर्म

स्थान - गिरदीकोट (घन्टाघर)

समय - रातको ८॥ बजे से

दिनाङ्क - ता० १६ जून १९६२ शनिवार मिती ज्येष्ठ शुक्ला १३

प्रवक्ता - पूज्य गुरुदेव श्री कांतिसागरजी महाराज साहब
न्यायतीर्थ मुनि श्री दर्शनसागरजी म०

निवेदक जोधपुर नागरिकगण—

बरकतुल्लाखां (चिकित्सा स्वास्थ्य मंत्री राजस्थान)
मोहनलाल राजदान
जगन्नाथ पुरोहित
बहिदुल्लाखां
शारदाप्रसाद व्यास (अध्यक्ष जिला कांग्रेस)
मदनलाल पुरोहित (मंत्री जिला कांग्रेस)
दौलतराम चौधरी (प्रमुख जिला परिषद)
रामगोपाल अग्रवाल (कामदार साहब)
मेहता रंगरूपमल एडवोकेट
नरसिंगदास लूंकड़ (अध्यक्ष क्लोथ मर्चेन्ट)

लालचन्द सुराणा (अध्यक्ष यूनियन मर्चेन्ट एसो०)
जोगमल सिंघी (अध्यक्ष खाद्य पदार्थ)
चौथमल सोनी (अध्यक्ष मार्केट एसोसियेशन)
रामरख (अध्यक्ष हलवाई एसोसियेशन)
एस० एस० पारीख (अध्यक्ष सार्जन्स डीलर्स, जोधपुर)
लक्ष्मीचन्द सुराणा (अध्यक्ष कुमारी लकड़ी व्यापारी मंडल)
केदारदास जेसलमेरिया (अध्यक्ष सराफा एसो०)
मिश्रीमल (मंत्री ग्रेन मर्चेन्टस एसो०)
मंशाराम राठी (मंत्री किराणा मर्चेन्टस)

कनकराज (मंत्री जनरल मर्चेन्टस एसो०)
लोगमल भैरवाणी (मंत्री पुरुषार्थी केन्द्रीय पंचायत जोधपुर)
चौथमल (मंत्री पीतल, तांबा एसो०)
मगराज जेसलमेरिया
मूलचन्द भाटी एडवोकेट
सज्जनराज गुणोत
रंगरूपमल सुराणा
तुलसीदास
रामचन्द्र
चम्पालाल
आर० विजय
कानमल पारख

नवयुग प्रेस, जोधपुर

लोहावट में प्रेम की बरसात कर पूज्यश्री जोधपुर पधारे। जोधपुर का श्री संघ चातुर्मास हेतु विनंती कर रहा था। उदयपुर श्री संघ की भी विनंती चल रही थी। पूज्यश्री ने लाभालाभ देखकर उदयपुर का निर्णय किया था।

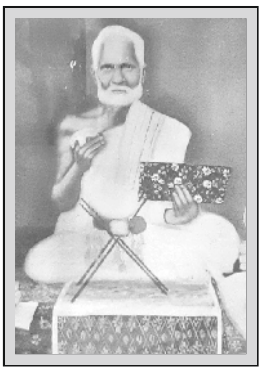

जोधपुर के सुप्रसिद्ध श्रावकवर्य श्री सूरजमलजी पारख जो वकील थे और उस समय राजघराने में बडे ओहदे पर नियुक्त थे, उन्होंने 70 वर्ष की वयोवृद्ध उम्र में वि. सं. 1981 में दीक्षा लेकर पूज्य गणनायक आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म. सा. के शिष्य बने थे। उनका नाम रखा गया था- मुनि हर्षसागर! तपस्या के साथ 9 वर्ष का उत्कृष्ट चारित्र पालकर पालीताना में स्वर्गवासी बने।

जोधपुर के साथ परम्परा का संबंध था। जोधपुर सकल श्री संघ एवं समाज की विनंती पर सार्वजनिक प्रवचनों का आयोजन किया गया।

ता. 16 जून 1962 को रात्रि 8.30 से 10.30 बजे तक गिरदीकोट में दिया गया उनका राष्ट्र धर्म विषय पर प्रवचन बहुचर्चित रहा। उस समय पाण्डाल में 20 हजार से अधिक लोगों की भीड थी। दूर-दूर तक लोग नजर आते थे। इस प्रवचन सभा में उस समय के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. बरकतुल्ला खां उपस्थित थे। वे न केवल उपस्थित थे, अपितु इस प्रवचन सभा में संपूर्ण समाज को उपस्थित होने का आह्वान उनके द्वारा किया गया था। वे पूज्यश्री के संपर्क में आये थे। पूज्यश्री से प्रभावित थे। पूज्यश्री ने उनको कुरान शरीफ की आयतें सुनाकर अहिंसा और धर्म की परिभाषा समझाई थी।

प्रवचन हेतु प्रकाशित पेम्पलेट में शहर के सभी जातियों के विशिष्ट आगेवान लोगों ने हस्ताक्षर किये थे। हस्ताक्षर कर्ताओं में श्री बरकतुल्ला खां, श्री मोहनलालजी राजदान, श्री जगन्नाथजी पुरोहित, श्री वहिदुल्ला खां, श्री तारकप्रसादजी व्यास (अध्यक्ष जिला कांग्रेस), श्री मदनलालजी पुंगलिया (मंत्री जिला कांग्रेस), श्री दौलतरामजी चौधरी (उप प्रमुख जिला परिषद्), श्री रामगोपालजी अग्रवाल (कामदार साहब), एडवोकेट मेहता श्री रंगरूपमलजी आदि कई विशिष्ट लोगों ने पूज्यश्री के प्रवचन में पधारने का आमंत्रण दिया था।

पूज्यश्री ने लगातार दो घंटे तक राष्ट्र धर्म की चर्चा करते हुए देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों की विशद व्याख्या की थी।

❋

मंदबुद्धि बालक

विद्यालय में सब उसे मंदबुद्धि कहते थे। उसके गुरुजन भी उससे नाराज रहते थे क्योंकि वह पढ़ने में बहुत कमजोर था और उसकी बुद्धि का स्तर औसत से भी कम था।

कक्षा में उसका प्रदर्शन हमेशा ही खराब रहता था। और बच्चे उसका मजाक उड़ाने से कभी नहीं चूकते थे। पढने जाना तो मानो एक सजा के समान हो गया था, वह जैसे ही कक्षा में घुसता और बच्चे उस पर हंसने लगते, कोई उसे महामूर्ख तो कोई उसे बैलों का राजा कहता, यहाँ तक की कुछ अध्यापक भी उसका मजाक उड़ाने से बाज नहीं आते। इन सबसे परेशान होकर उसने स्कूल जाना ही छोड़ दिया।

अब वह दिन भर इधर-उधर भटकता और अपना समय बर्बाद करता। एक दिन इसी तरह कहीं से जा रहा था, घूमते-घूमते उसे प्यास लग गयी। वह इधर-उधर पानी खोजने लगा। अंत में उसे एक कुआं दिखाई दिया। वह वहां गया और कुएं से पानी खींच कर अपनी प्यास बुझाई। अब वह काफी थक चुका था, इसलिए पानी पीने के बाद वहीं बैठ गया। तभी उसकी नजर पत्थर पर पड़े उस निशान पर गई जिस पर बार-बार कुएं से पानी खींचने की वजह से रस्सी का निशान बन गया था। वह मन ही मन सोचने लगा कि जब बार-बार पानी खींचने से इतने कठोर पत्थर पर भी रस्सी का निशान पड़ सकता है तो लगातार मेहनत करने से मुझे भी विद्या आ सकती है। उसने यह बात मन में बैठा ली और फिर से विद्यालय जाना शुरू कर दिया।

कुछ दिन तक लोग उसी तरह उसका मजाक उड़ाते रहे पर धीरे-धीरे उसकी लगन देखकर अध्यापकों ने भी उसे सहयोग करना शुरू कर दिया। उसने मन लगाकर अथक परिश्रम किया। कुछ सालों बाद यही विद्यार्थी प्रकांड विद्वान वरदराज के रूप में विख्यात हुआ, जिसने संस्कृत में मुग्धबोध और लघुसिद्धांत कौमुदी जैसे ग्रंथों की रचना की।

शिक्षा:- मित्रों! हम अपनी किसी भी कमजोरी पर जीत हासिल कर सकते हैं, बस आवश्यकता है कठिन परिश्रम और धैर्य के साथ अपने लक्ष्य के प्रति स्वयं को समर्पित करने की..!

गोत्र इतिहास
41

सिंघवी/सिंघी गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

सिरोही में निवासरत ननवाणा बोहरा परिवार के श्री देवजी के पुत्र को सर्प ने काट लिया। जहर का प्रभाव पूरे शरीर में फैल गया। परिणाम स्वरूप वह मूर्च्छित हो गया।

गुरुदेव ने नवकार महामंत्र का जाप किया। मंत्रित जल के छिडकाव से लडका जहर से मुक्त होकर स्वस्थ हो गया।

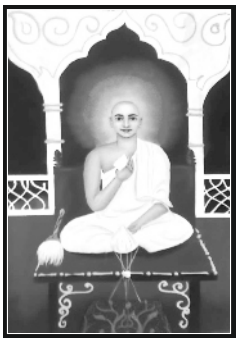

विक्रम संवत् 1164 में विहार करते हुए पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनवल्लभसूरीश्वरजी म.सा. सिरोही नगर में पधारे।

उनके उपदेशों से प्रभावित होकर ननवाणा बोहरा आसानंदजी के पुत्र विजयानंदजी ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया।

श्री विजयानंदजी की 16वीं पीढी में सोनपालजी हुए। उन्होंने वि. सं. 1484 में श्री सिद्धाचल का छह री पालित संघ आयोजित किया।

गुरुदेव ने परमात्मा आदिनाथ के दरबार में उसे संघवी पद दिया। वही उनका गोत्र हो गया। वे सिंघवी/सिंघी कहलाने लगे।

इनके कुल छह पुत्र थे। तीन पुत्र जोधपुर रहे व तीन गुजरात जाकर बसे। बडे पुत्र सिंहाजी के 5 पुत्र थे, जिनसे अलग अलग शाखाऐं/खांपें निकली।

1. चांपसीजी से-भींवराजोत, धनराजोत, गाढमलोत, महादसोत।

2. पछाणजी से-बागमलोत

3. पारसजी से-सुखमलोत, रायमलोत, रिढमलोत, प्रतापमलोत, जोरावरमलोत, मूलचन्दोत, हिन्दूमलोत, धनरूपमलोत व हरचन्दोत।

4. गोपीनाथजी से-भागमलोत

5. मोडणजी से- मोडणोत।

सिंघी/सिंघवी खानदान का इतिहास अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है। इस खानदान के लोग राज्य के विशिष्ट पदों पर रहे हैं। जोधपुर में सिंधियों के चौक में स्थित श्री पार्श्वनाथ परमात्मा का मंदिर इसी परिवार द्वारा वि. 1516 में निर्मित है। इस मंदिर को नवाब नाहरबेग द्वारा वि. 1737 में ध्वंस करने के बाद सिंघवी पदमा पारसोत ने पुनः इसका निर्माण कराया। इसका वर्णन मूंथा नैणसी ने अपने ग्रंथ 'मारवाड रे परगनां री विगत' में किया है। सोजत की दादावाडी का निर्माण इसी सिंघवी परिवार की देन है।

जोधपुर के राजा मानसिंहजी के समय में सिंघवी इन्द्रराजजी की सेवाऐं, उनकी स्वामिभक्ति, राजनीतिक पटुता और रणकुशलता बेजोड रही थी। इससे प्रभावित होकर इन्द्रराजजी को परवाना लिखकर दिया-

आज सुं थांरो दियोडो राज है म्हारे राठोडों रो वंश रेसी ओ राज करसी, उआ थांरा घर सुं एहसानबंद रेसी।

सुजानगढ के सिंघी पन्नेचंदजी ने अपने बडे भ्राता जेसराजजी की अंतिम इच्छा के परिणाम स्वरूप श्री पार्श्वनाथ परमात्मा का भव्यातिभव्य जिन मंदिर का निर्माण किया। इस निर्माण में 10 वर्ष लगे। इसकी प्रतिष्ठा पूज्य आचार्य प्रवर श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के करकमलों से विक्रम संवत् 1971 में हुई। इस प्रतिष्ठा के अवसर पर अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर कान्फरेन्स का नवम अधिवेशन आयोजित हुआ था। इस मंदिर में सोने व कांच की पच्चीकारी की गई है, वह अद्‌भुत है, दर्शनीय है।

जालोर जिले के भांडवपुर के मंदिर का निर्माण भी इसी सिंघवी खानदान के श्रेष्ठियों द्वारा करवाया गया है।

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. इसी सिंघवी गोत्र के थे।

पत्र में लेख

प्रिय आत्मन्

गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.

प्रिय आत्मन्!

तुम्हारा पत्र मिला है। पाकर प्रसन्नता हुई है। तुमने लिखा कि मैंने आपके पत्र को चार बार पढ़ा है। बहुत अच्छा लगा है। हर बार कुछ नयापन लगता है।

तुमने ठीक लिखा है। मैं भी जब किसी स्तवन को बार-बार पढ़ता हूँ तो हर बार कुछ नया लगता है।

तुमने पूछा है- परमात्मा की भक्ति कैसे करे!

भक्ति करने से पहले जिनकी भक्ति करनी है, उसका परिचय अनिवार्य है।

जीवन की सिद्धि के कुल चार स्टेप्स हैं। उन्हें तूं पहले अच्छी तरह समझ ले।

1. परिचय

सबसे पहले पगथिये का नाम है- परिचय! भक्ति कभी भी बिना परिचय के संभव नहीं है। जिस व्यक्ति के बारे में तूं कुछ भी जानता नहीं है, उसके बारे में तुम्हारे हृदय में न तो आदर का भाव प्रकट होगा, न अनादर का।

परमात्मा का सबसे पहले परिचय प्राप्त करना है। बाह्य परिचय तो हमने बहुत पा लिया।

उनका नाम क्या है?

उनका जन्म कहाँ हुआ?

उनके माता पिता का नाम क्या है?

दीक्षा कब ली? कितनी उम्र में ली?

कुल उम्र कितनी थी? आदि आदि।

यह तो बाह्य परिचय हुआ। इस बाह्य परिचय के कारण परमात्मा के प्रति हमारे हृदय में भक्ति पैदा नहीं होगी। उनका अन्तरंग परिचय प्राप्त करो। क्योंकि वही मेरी भक्ति का आधार है।

परमात्मा केवलज्ञानी है। वे एक समय में समस्त द्रव्यों और उनकी पर्यायों को जान लेते हैं। अहो! क्या अद्‌भुत परमात्मा का ज्ञान है।

जब परमात्मा के इस अंतरंग परिचय का बोध प्राप्त करोगे तो परमात्मा को देखकर नाच उठोगे। और बोलोगे कि अहो! मेरे परमात्मा सबसे अलग हैं... सबसे निराले हैं...। तीन जगत में ऐसा कोई नहीं जो मेरे परमात्मा की बराबरी कर सके।

तभी तो श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज अजितनाथ परमात्मा के स्तवन में फरमाते हैं-

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुझ अनंत अपार।
ते सांभरतां उपनी रे, रुचि तिणे पार उतार।
अजित जिन तारजो रे, तारजो दीनदयाल॥

श्रीमद्‌जी फरमाते हैं-

मैं तेरी बाह्य ऋद्धि को देखकर तेरे पास नहीं आया हूँ।

समवशरण की दिव्य छटा को देखकर मैं तेरी शरण में नहीं आया हूँ।

करोड़ों देव देवियों के इस मेले को देखकर भी मैं तुमसे प्रभावित नहीं हुआ हूँ।

यह लीला तो कोई जादूगर... कोई इन्द्रजाल रचने वाला भी कर सकता है।

पर मैं आया हूँ आपके उस खजाने को देखकर जो किसी के पास नहीं है।

कोई व्यक्ति एक समय में एक ही बात सुन सकता है। समझ सकता है।

पर आपका ज्ञान कितना अनंत है! एक समय में सारी दुनिया का बोध!

विशेषता इस बात की कि सब देखकर भी आप अपने में ही लीन रहते हैं। कौन आपसे प्रेम करता है... कौन निंदा करता है...! आप अपने ज्ञान में सब देखते हैं। फिर भी आप न तो प्रेम करने वाले के प्रति राग करते हैं और न निंदा करने वाले के प्रति द्वेष करते हैं।

आप पूर्णरूप से निर्लिप्त हैं। सब कुछ जानते हुए भी राग द्वेष से परे रह पाना, यही तो आपकी विशिष्टता है।

हे प्रभो! मैं कितना भाग्यशाली हूँ कि मुझे आप मिले। आपका परिचय मिला।

यह परिचय हमारे अन्तर की वीणा के तारों को झंकृत करता है।

परिचय पाने के बाद दूसरा स्टेप है-

2. प्रीति

परिचय होने के बाद हमारे हृदय में उनके प्रति प्रेम पैदा होता है। मात्र परिचय प्राप्त करके ही नहीं रहना है। दूसरे पगथिये पर आगे बढ़ना है। प्रेम करना है... हृदय से प्रेम करना है।

प्रेम और राग में अन्तर है। राग में तो सौदा होता है। राग कभी भी द्वेष में बदल सकता है। जबकि प्रेम का परिणाम तो केवल समर्पण ही है।

प्रेम में जिनसे प्रेम है, वह मुख्य होता है।

राग में मैं अपने आपको मुख्य मानता हूँ।

राग में स्वार्थ भाव है। स्वार्थ पूर्ति के अभाव में राग, द्वेष में बदल जाता है।

राग अस्थायी है। जबकि प्रेम तो स्थायी होता है। वह वर्धमान है। लगातार बढता जाता है। कम होने का कोई कारण नहीं है।

क्योंकि प्रेम का कारण स्वार्थ नहीं है। बल्कि परमात्मा का परिचय है। लेकिन प्रेम यथार्थ चाहिये। प्रेम में प्रलोभन नहीं, आकांक्षा नहीं, शर्त नहीं। परमात्मा के पास जाकर बोलो- तुम मुझसे प्रेम करो न करो, मैं प्रेम करता रहूंगा। तुम मुझसे बात करो न करो, मैं तेरे पास अपना हृदय खोलता रहूंगा।

तुम परमात्मा से प्रेम करते-करते एक कदम आगे बढना। तुम तय करना कि जो भी मेरे परमात्मा से प्रेम करते हैं, मैं उनसे भी प्रेम करूँगा। मेरा रिश्ता परमात्मा से जुड़ गया तो वे सभी मेरे रिश्तेदार हो गये, जो परमात्मा से जुड़े हैं। इस उदात्त भावना को धारण करना।

परमात्मा से प्रेम है और उदात्त भावना का हृदय में संचार नहीं हुआ तो समझना, कोई कमी मुझमें रह गई है।

प्रेम की गहराई तुम्हें ऑटोमेटिक तीसरे स्टेप पर पहुँचा देगी।

3. भक्ति

प्रीति का परिणाम भक्ति है। भक्ति का अर्थ होता है- मैं वह करूँगा, जो तुम चाहोगे। तुम्हारी रजामंदी के सिवाय कोई काम नहीं। जिसमें तुम्हारी आज्ञा है, वो ही काम मुझे करना है।

मेरा मन वही सोचेगा, जैसा तुम चाहोगे।

मेरे हाथ वो ही काम करेंगे, जैसी तुम्हारी आज्ञा होगी।

मेरे पाँव उसी दिशा में चलेंगे, जिधर चलने का तुम्हारा आदेश होगा।

मेरी आंख वही देखेंगे, जिसे दिखवाना तुम चाहोगे।

मेरे कान वही शब्द सुनेंगे, जो तुम सुनवाना चाहोगे।

तुम्हारी आज्ञा ही मेरे लिये सर्वोपरि है।

इसी को शास्त्रकारों ने तात्त्विक भक्ति कहा है।

प्रिय आत्मन्!

तुम भक्ति को अच्छी तरह समझ लो। केवल भजन, गीत, स्तवन गा लेना, थोड़ा नाच लेना, वही भक्ति नहीं है। भक्ति में व्यक्ति अपना अस्तित्व विस्मृत कर जाता है। या कहना चाहिये- अपने व्यक्तित्व को तुम्हारे व्यक्तित्व में समा लेता है। ऐसे ही, जैसे एक नदी समुद्र से मिलती है। वह अपना नाम, अपना आकार, अपना स्वाद सब कुछ समर्पित कर देती है। अपनी स्वतंत्रता समाप्त कर देती है।

अध्यात्म की अपनी गणित है। यहाँ स्वतंत्र वह नहीं है जो स्वतंत्र है। बल्कि स्वतंत्र वह है जो अपनी स्वतंत्रता को समाप्त करने के लिये तत्पर है।

तुम्हें ऐसे ही तो स्वतंत्रता प्राप्त करनी है। जब तक तुम स्वतंत्र हो, तब तक तुम परतंत्र हो। जिस समय तुम अपनी स्वतंत्रता मिटाने के लिये तैयार हो जाओगे, स्वतंत्र हो जाओगे।

यहाँ स्वतंत्र शब्द का अर्थ थोड़ा गहरा है।

प्रिय आत्मन्!

आज पत्र थोड़ा लम्बा हो गया है। स्वतंत्र की व्याख्या मैं अगले पत्र में लिखूंगा। आगे के स्टेप्स भी तुम्हें समझाने हैं। मेरे पत्र की प्रतीक्षा करना। जब तक अगला पत्र न मिले, तब तक इस पत्र का सतत स्वाध्याय करना।

शुभकामनाऐं

आचार्य जिनमनोज्ञसूरी के 50वें संयम वर्ष प्रवेश पर विशेष

मेरी मंगल कामना !

गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.

वि. सं. 2030 के आषाढ शुक्ला दशमी का मंगल प्रभात था। मेरी, पू. माताजी म. की व बहिन विद्युत्प्रभा की बडी दीक्षा का विधान चल रहा था।

श्री सिद्धाचल महातीर्थ स्थित श्री जिनहरि विहार धर्मशाला के उपर वाले हॉल में यह विधान चल रहा था। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. विधि-विधान करवा रहे थे। सूत्र-वांचन पूज्य मुनिराज श्री दर्शनसागरजी म. कर रहे थे।

तभी एक घोडागाडी हरि विहार धर्मशाला के मुख्य द्वार पर रुकी।

पिता पुत्र नीचे उतरे। अपना सामान रखा। वे सीधे उपर हॉल में आ गये। पूज्य गुरुदेवश्री के पास पहुँचकर उन्होंने विनय के साथ वंदना की। तत्पश्चात् प्रार्थना की कि आज बडी दीक्षा का विधान चल रहा है।

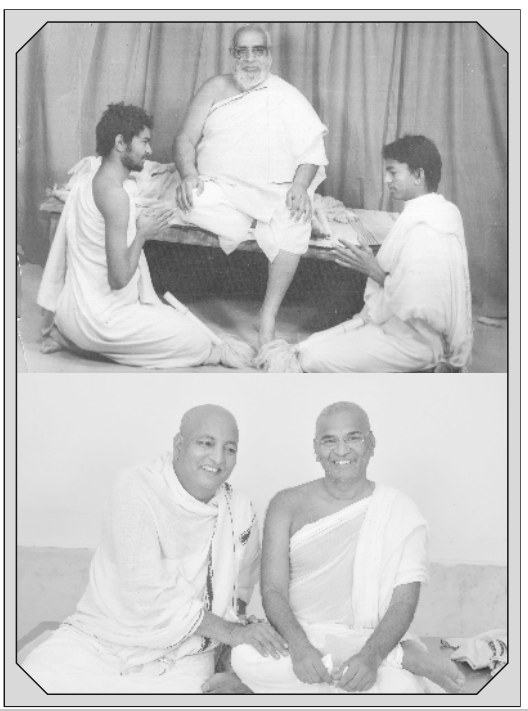

इसके साथ-साथ हम पिता पुत्र की भी दीक्षा करवा दें।

पूज्यश्री का उनसे सामान्य परिचय था। पूज्यश्री ने दो मिनट विचार करके कहा- चार दिन बाद चातुर्मास प्रारंभ होगा। चातुर्मास में आपको यहाँ रहना है। सूत्र कंठस्थ करने हैं। शिक्षा प्राप्त करनी है। तत्पश्चात् आपकी भावनाओं का सम्मान होगा।

पिताजी का नाम था- प्रतापमलजी छाजेड और पुत्र का नाम था मिश्रीमल छाजेड!

मूल बाडमेर जिले के बालेवा निवासी वर्तमान में छत्तीसगढ के नंदिनी खुंदिनी नामक गाँव में निवास करते थे। पिता पुत्र ने दीक्षा की भावना से अपने घर से प्रस्थान किया था।

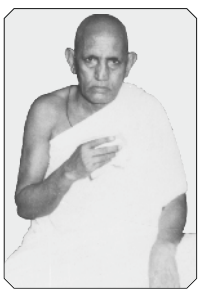

श्री प्रतापमलजी की उम्र 60 के करीब थी, जबकि बालक मिश्रीमल आठ या नौ वर्ष का था। पिताजी की भावना कब से संयम ग्रहण की चल रही थी। पुत्र मिश्रीमल के हृदय में भी दीक्षा का भाव प्रकट हुआ था। उसे साधु अच्छे लगते थे। चार महिने वे पिता पुत्र गुरुदेवश्री के सानिध्य में रहे।

अधिकतर मिश्रीमल हमउम्र होने से मेरे पास रहता था। वयोवृद्धा साध्वी रत्ना श्री मोहनश्रीजी म. किरणश्रीजी म. हेमलताश्रीजी म. के वात्सल्य ने उसे संयम भावों में एकदम दृढ़ कर दिया था।

(शेष पृष्ठ 33 पर)

धारावाहिक कथा

मृत्यु को महोत्सव बना दिया

पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

मैं आज जब श्रावक जीवन के मनोरथ संबंधी ग्रंथ का स्वाध्याय कर रही थी। तभी मेरी स्मृतियों में एक मुस्कुराता चेहरा उभर आया। उन्होंने शासन और धर्म संघ के प्रति जो सेवाएं दी थी, वही मेरे आकर्षण का प्रमुख कारण था।

ललवाणी परिवार की पुत्रवधू स्वाध्याय प्रिया क्रियानिष्ठा सुश्राविका श्यामाजी खरतरगच्छ संघ के लिये स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने वाला नाम है। मेरा उनसे प्रथम परिचय तब हुआ था, जब हम प.पू. तत्कालीन उपाध्याय एवं वर्तमान में खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में इचलकरंजी में नवनिर्मित मंदिर एवं दादावाड़ी की प्रतिष्ठा के लिये पहुँचे थे।

प्रतिष्ठा समारोह में महिलाओं की परिषद् बनाने का निर्णय हुआ। नाम रखा गया- मणिधारी महिला परिषद्! अध्यक्ष हेतु सर्वसम्मति से श्यामाजी ललवाणी नियुक्त किये गये। तब से मेरा श्यामाजी से परिचय शुरू हुआ।

श्यामाजी का पितृपक्ष यद्यपि तेरापंथ मान्यता का था पर जब विवाह के बाद ललवाणी परिवार में सम्मिलित हो गयी तो व्यावहारिक घरेलू परिवर्तन के साथ धार्मिक परिवर्तन भी पूरी तरह आत्मसात् कर लिया था। उन्होंने तुरन्त मंदिर विधि के अनुसार प्रतिक्रमण और क्रियाएं कंठाग्र कर ली। उनके कंठ का माधुर्य इतना सुहाना था कि प्रतिदिन व्याख्यान के अंत में गीतिका की मांग रहती थी। यद्यपि उनमें नववधू का सहज संकोच था पर गुरुभक्ति की झंखना उन्हें मुखर कर देती थी। वे नित नयी स्वरचित रचनाएं प्रस्तुत कर वातावरण को संगीतमय बना देती थी।

उनमें विषय ग्रहण की तीव्र अभिलाशा थी। विषय चाहे तत्त्वज्ञान का हो या विषय संघीय इतिहास का, वे उसमें पूर्ण तन्मयता एवं जिज्ञासा से रुचि लेते थे। इसी रुचि का परिणाम था कि उन्हें आवश्यक क्रिया के अतिरिक्त तत्त्व संबंधी जानकारी भी पर्याप्त हो गयी थी। उन्हें देखकर कभी यह अहसास नहीं होता था कि वे जन्मजात खरतरगच्छीय परम्परा की नहीं है। बल्कि गच्छ-गौरव और गच्छ-निष्ठा उनके रग-रग में रम गयी थी।

नेतृत्व क्षमता उनमें प्रशंसनीय थी। सबको संतुलित रूप से मान-सम्मान देते हुए संगठन को आगे बढ़ाने में वे एक उदाहरण थे। इसी कारण जब मणिधारी महिला परिषद् का प्रथम कार्यकाल पूरा होने पर मुझे बैंगलोर सन् 2006 के चातुर्मास में निवेदन किया गया तो सभी की सहमति से उन्हें ही दुबारा अध्यक्ष घोषित किया गया। अगर यह भी कहा जाय कि प्रारंभ से अंत तक चाहे वे अध्यक्ष थे या नहीं, परिषद् में वे सर्वमान्य ही रहे थे। बात परिषद् की ही क्यों वास्तविकता तो यह हैं कि चाहे परिवार हो या संघ, उनकी राय अपने आप में गहराई से सुनी जाती थी और उसे चिन्तन योग्य माना जाता था।

सुश्रावक श्री शांतिलालजी का उन्हें भरपूर सहयोग था। संसार का जीवन साथ-साथ जीया जरूर पर संसार में रहते हुए भी दोनों ने धर्म का जीवन ज्यादा रुचि से जीया था। व्याख्यान, स्वाध्याय, सामायिक, देवदर्शन-पूजन, गुरुभक्ति सब कुछ उनका साथ ही होता था। श्यामाजी बताते थे कि हम दोनों आत्मिक स्तर पर भी साथ-साथ ही जीते थे। न उन्हें और न मुझे आराधना की किसी भी प्रवृत्ति में देरी से जाना पसंद था।

सन् 2018 में शांतिलालजी का समाधि एवं संथारा सहित स्वर्गवास हो गया। अपने मोह को हृदय में ही समेटकर पूर्ण शांति और स्वस्थता रखते हुए वे उन्हें आराधनामय रखती थी। लिखने योग्य घटना तो उनके जीवन की अपेक्षा

उनकी मृत्यु बनी।

सन् 2021 के पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री की निश्रा में शताधिक साधु साध्वीजी भगवंत के पालीताना में हुए चातुर्मास में श्यामाजी का काफी दिनों तक वहाँ प्रवास रहा। मुझे जब भी मिलते मैं कहती थी- श्यामाजी। अब आप संयम क्यों नहीं ले रहे हैं? संयम के प्रति आपके हृदय में इतना अधिक अहोभाव है, तो रुकावट कहाँ हैं?

सुनकर वे यही कहते- मुझे संयम और संयमी खूब अच्छे लगते हैं। मैं संयम जीवन चाहती हूँ पर उसके लिये भावों में वह तीव्रता नहीं आ रही है। कहीं मेरे अंतराय कर्म का उदय है।

चातुर्मास में ही उपधान तप का भव्य आयोजन हुआ। श्यामाजी को उपधान की आराधना में देखकर मैं चकित थी। यद्यपि उन्होंने उपधान तप की आराधना विधिपूर्वक संपन्न की पर अंतिम दिनों में उन्हें कुछ अस्वस्थता का अनुभव हो गया था। खाने पीने में अरुचि, पेट दर्द आदि होने पर भी उनकी श्रद्धा अटल थी। मुझे मोक्षमाला तो धारण करनी ही है।

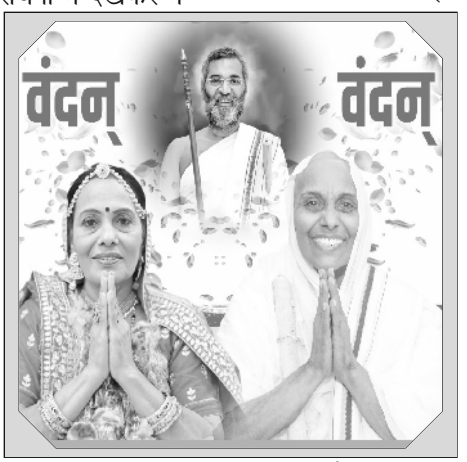

बहिन तुल्या जेठानी अ. सौ. सुशीलाजी के साथ उन्होंने उत्साह के साथ मोक्ष माला धारण की। परिवार के आग्रह से उन्होंने जाँच करवायी तो परिणाम चिन्ताजनक आया। उन्हें मुंबई ले जाया गया पर कैंसर अंतिम स्थिति में था। बीमारी लाईलाज हो चुकी थी। मौत ने दस्तक दे दी थी।

उधर परिवार में संघ की तैयारियाँ हो चुकी थी। जिस समय ललवानी परिवार ने शत्रुंजय से गिरनार पदयात्रा संघ के भव्य आयोजन का मुहूर्त ग्रहण किया था, उस समय ऐसी कोई आशंका भी नहीं थी कि परिवार में ऐसी कोई स्थिति बन सकती है।

संघ में पूरा परिवार था पर श्यामाजी की अनुपस्थिति सभी के हृदय में एक अव्यक्त रिक्तता का अहसास कराती थी।

समय की सुई धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। श्यामाजी की स्थिति दिनोंदिन गिरती जा रही थी। डॉक्टर ने सेवा और प्रार्थना का कहकर घर ले जाने की अनुमति दे दी थी।

श्यामाजी जागरूक थे। अब उनकी जागरूकता और अधिक बढ़ गयी थी। वे परिवार से पूर्णत: निवृत्त थे ही पर अब संसार एवं सांसारिक व्यवस्थाओं से और अधिक निवृत्त हो गये। उन्होंने अपना मन प्रभुभक्ति एवं आराधना में लीन कर दिया।

श्यामाजी ने मृत्यु को महोत्सव में बदलने का संकल्प कर लिया। उसके लिये चारों ओर का वातावरण भी उन्हें प्राप्त हो गया। उनके पुत्रद्वय धर्म से गहरे जुड़े हुए थे। वे अपनी माताजी की व्याधि देखकर उनकी सद्गति हेतु पूर्णत: तत्पर हो गये। तीन वर्ष पूर्व उन्होंने इसी व्याधि में अपने पिताजी को निर्यामणा (अंतिम आराधना) करवायी थी।

पुत्रों से भी उनकी बहुएं दो कदम और आगे थी। उनके कक्ष को ही नहीं बल्कि घर को भी जैसे धर्मशाला का रूप दे दिया। उनका स्वास्थ्य क्षीण होता जा रहा था। कोई भी मिलने आता, वह उनकी समता देखकर जैसे कायल हो जाता था। शारीरिक कमजोरी बढ़ती जा रही थी पर भीतर की आत्मा उतनी ही अधिक तेजस्वी, ऊर्जावान और सात्विक हो रही थी। खाना तो प्राय: बंद ही था पर अब तो पानी निगलना भी कठिन हो रहा था। बाहर से ऐसा लग रहा था कि वे क्षीण हो रहे हैं पर भीतर में वे उतने ही शक्तिशाली हो रहे थे। 3 अप्रेल 2022 को प्रात: उनका भाव-जगत जैसे अध्यात्म के सागर में हिलोरें मारने लगा।

उनका चिंतन आत्मा की गहराई में उड़ान भरने लगा। भीतर एक साथ हजार सूर्यों का प्रकाश छितरने लगा। सोचा- अब यह शरीर मेरा साथ छोड़ने की तैयारी में है। शरीर मेरा साथ छोड़े इसका अर्थ हुआ- मैं कमजोर और कर्मसत्ता शक्ति संपन्न! मैं अपनी अनंत शक्ति को प्रकट करूंगी, तो ही मेरा जिनशासन प्राप्त होना सार्थक है।

शरीर मुझे छोड़े उससे पूर्व मैं ही शरीर की आसक्ति का त्यागकर स्वयं को देह में रहते हुए देहातीत अवस्था में

जीने का पुरुषार्थ करूंगी!

उन्होंने अन्तर्मन में वज्रसंकल्प धारण करते हुए परिवार को एकत्र किया और कहा- शरीर से जितना काम लेना था, ले चुकी हूँ। अब शरीर ने मुझे आगे की गति करने से रोक लिया है। मैं विवेक एवं जागृतिपूर्वक शरीर को विदा करना चाहती हूँ जिसे शास्त्रों की भाषा में संलेखना कहते हैं।

परिवार संस्कारी था। शरीर अब गतिशील होने की स्थिति में नहीं था। शरीर से यद्यपि कुछ करवाना संभव न था पर आत्मा इस व्याधिमय शरीर में भी सब कुछ कर सकती थी। उसकी प्रगति में कोई बाधा नहीं थी। इस व्याधिमय शरीर से भी आत्मा की भरपूर कमाई हो सकती थी। सद्गति पाने के लिये स्वस्थ शरीर की अपेक्षा स्वस्थ मन की जरूरत होती है जो कि उनके पास मौजूद था।

परिवार उनकी शारीरिक और मानसिक दोनों स्थितियों को समझ रहा था। समझने के साथ प्रबुद्ध भी था। उन्होंने बाधक बनने की अपेक्षा संपूर्ण सहयोग देने का निर्णय लिया। बाड़मेर में उपस्थित प.पू. गुरुदेव गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. को निवेदन किया कि शारीरिक स्थिति अत्यन्त क्षीण हो चुकी है पर मानसिकता अत्यन्त सत्वशाली है। वे अपने शरीर से शेष रहा सत्व भी कर्मनिर्जरा के लिये खर्च करना चाहते हैं। उनकी प्रार्थना है कि उन्हें कर्मनिर्जरा का अवसर देते हुए आप उन्हें जीवन-गत समस्त दोषों की आलोचना करवाते हुए अनशन की स्वीकृति दें।

गुरुदेव ने सुना तो उनका हृदय श्यामाजी के प्रति अहोभाव से भर उठा। श्यामाजी का विनय, विवेक एवं औचित्य तो उन्होंने आज तक देखा था पर उनकी आत्मा इतनी अधिक सत्वशाली होगी जो कैंसर जैसी भयावह स्थिति में बेहोशी के इन्जेक्शन न मांगकर और अधिक होश में आना चाहती है। यह जिनशासन नि:संदेह कितना अद्भुत है जो जीना ही नहीं सिखाता बल्कि मरने की कला भी सिखाता है। बलिहारी है परमात्मा द्वारा स्थापित इस धर्म की, जहाँ बाह्य दुश्मनों के प्रति समर्पण होता है पर आंतरिक शत्रुओं को भगाने के लिये रोम-रोम से शौर्य फूटता है। बाह्य शत्रुओं को भगाने के लिये सैनिकों में जोश होता है, वैसे ही भीतर के आत्मगत दुश्मनों से लोहा लेने के लिये कटिबद्ध होता है।

गुरुदेव ने द्रव्य क्षेत्र काल भाव का चिंतन कर संथारा हेतु स्वीकृति दी।

तुरन्त ही चारों ओर समाचार फैल गया।

अनशन की घोषणा ने श्यामाजी की साधना को श्रावक जीवन की अंतिम ऊँचाईयों तक पहुँचाने में और अधिक मजबूती प्रदान की। वे अब श्रावक जीवन की सार्थकता के अंतिम पायदान तक पहुँच गये थे।

श्यामाजी का श्रावक जीवन अनुमोदनीय था पर इस अनशन की खबर ने पूरे गच्छ और समाज में अनुमोदना का वातावरण बना दिया। मासक्षमण करना फिर भी आसान हो सकता है, पर अनशन करना तो जीवन का सर्वोत्तम सत्व है।

मीडिया ने सभी को अनुमोदना का अवसर दिया। जिसने भी सुना अनुमोदना किये बिना नहीं रहा।

खचाखच भरे गृहांगन में अनशन ग्रहण के अवसर पर पूर्ण समाधिस्थ श्यामाजी के चेहरे पर आज की दीप्ति अलग ही थी। उनके रोम-रोम से उल्लास फूट रहा था। चेहरा देखकर बीमारी की कल्पना नहीं हो सकती थी।

ठीक समय पर पूर्ण होशोहवास में चतुर्विध संघ की साक्षी से समस्त जीवों के प्रति क्षमापना करके पूर्वकृत पापों का मिच्छामि दुक्कडं देते हुए जब गच्छाधिपति गुरुदेवश्री के श्रीमुख से आजीवन संथारे का प्रत्याख्यान किया, तो पूरा माहौल जयनाद से गूंज उठा। श्यामाजी जैसे निहाल हो गये। उनके पापोदय में भी पुण्योदय की बांसुरी बज गयी।

अब वृद्धि शांति भवन घर नहीं था। वहाँ तो आराधना भवन का माहौल था। इचलकरंजी के प्रत्येक जैन परिवार में अनशन की चर्चा थी। जिन्हें जो भी समय मिला, एकल अथवा समूह में भवन में जाकर नवकार मंत्र की धुन अथवा अनुमोदन-गीतिकाएं गाते।

स्वयं श्यामाजी भी उसमें अपना मीठा सुर पिरोते। समय धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। जहाँ डॉक्टरों ने एक दो दिन जीवन की अवधि बतायी थी, वहाँ एक दो दिन में बीमारी गायब होती दिख रही थी। स्वस्थता बढ रही थी।

एक सप्ताह व्यतीत हुआ ही नहीं कि उनके त्याग रूप मुकुट में एक कलंगी और लग गयी। वे गुरुदेव से प्रार्थना करने लगे- मैं श्रावक जीवन के अंतिम मनोरथ को साकार करना चाहती हूँ। मैं संयमी वेश में परमात्मा महावीर की श्रमणी के रूप में प्राणों का विसर्जन करना चाहती हूँ। आप

मुझे अपना शिष्यत्व प्रदान करें।

गुरुदेव ने उनके भावप्रवण दृढ़ संकल्प का चिंतन करके उन्हें संयम ग्रहण की स्वीकृति दी।

श्यामाजी की आंखों में एक साथ हजारों दीप जल उठे। उनके भावों में बेमौसम जैसे दीपावली आ गयी। परिवार द्वारा संयमी मर्यादा का संपूर्ण पालन किया जायेगा, ऐसा आश्वासन पाकर गुरुदेव ने 12 मई 2022 को प्रातः शुभ मुहूर्त्त में चतुर्विध संघ की साक्षी से आधुनिक संसाधन से दीक्षा प्रदान की। वहाँ उपस्थित श्रमण भगवंत ने उन्हें रजोहरण प्रदान किया। विधि-विधान पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री ने करवाया।

श्यामाजी संयम वेश पाकर धन्य हो गये। ओघा हाथ में आते ही वे झूम उठे। धवल वस्त्र परिधान कर उनका श्यामल रंग जगमगा उठा। पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री की शिष्या बनी। नाम दिया- साध्वी समाधिप्रज्ञाश्रीजी!

भयंकर गर्मी... तपता सूरज... गर्म हवाएं... कैंसर की असाध्य और असह्य व्याधि पर श्यामाजी इन सबसे बेखबर मात्र आत्मभावों में रमण कर रहे थे। प्रतिदिन साधुचर्या के अनुसार दोनों समय प्रतिक्रमण, प्रतिलेखना आदि समस्त क्रियाऐं करते। उनकी पुत्रवधुऐं इन क्रियाओं में सहायक बनती। 25 दिन व्यतीत हो गये। पूरे गाँव में एवं बाहर भी जहां चार लोग मिले श्यामाजी की ही चर्चा थी। घर तो उपासना स्थल बन गया था। जब भी काम काज से निवृत्त होते श्रावक-श्राविकाएं आकर श्यामाजी की साधना को नमन करके भक्तिगीत या नवकार मंत्र की धुन प्रारंभ करते।

भाई म. व हम सभी विहार में थे पर गुरुदेव प्रतिदिन उन्हें समय का संयोजन करके उनकी समाधि को वर्धमान करते।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् (केएमपी) की मार्गदर्शिका साध्वी सम्यग्दर्शनाजी का चातुर्मास इचलकरंजी घोषित था। गुरुदेव का इंगित पाकर उन्होंने अपनी गति बढ़ा दी। वे 1 जून को इचलकरंजी पहुँचे। वहाँ पहुँचकर साध्वी समाधिप्रज्ञाश्रीजी के समाधि भावों की अभिवृद्धि करने लगे।

समाधिप्रज्ञा की प्रसन्नता, उनके चित्त की समाधि हर पल बढ़ रही थी। उनके हृदय में जीवमात्र के प्रति क्षमापना के साथ अपने शरीर के प्रति अनासक्ति का भाव था। जागरूकता पूर्वक अपनी प्रतिलेखना प्रतिक्रमण आदि क्रियाएं करती थी।

श्यामाजी धीरे-धीरे कृश होते जा रहे थे, परन्तु उनकी आत्मज्योति हर पल बढ़ रही थी। अनशन की अवधि में पूरा परिवार जैसे एक पाँव पर खड़ा था। संघवी श्री माणकचंदजी, श्री दिलीपजी, अरुणजी, शैलेष, संखेश, सुश्राविका सुशीलाजी, कविता, नीतू, विधि ललवानी, पिंकी चौधरी संपूर्ण पितृपक्ष एवं सकल संघ उनकी सेवा में तत्पर था। उनके दोनों पुत्र बाहर की सारी व्यवस्थाएं भूलकर समाधिप्रज्ञाश्रीजी के इर्द-गिर्द रहते थे पर जेठपुत्र अरुण भी अपना पूरा समय वही व्यतीत कर रहे थे। गुणियाजी के शिलान्यास में उनका लाभ था पर मेरे आग्रह पर उसमें भी खुद न जाकर बच्चों को भेजा। कर्मनिर्जरा की इस अनुपम साधना में सभी अपनी यथायोग्य आहुति दे रहे थे।

2 जून 2022 का आखिर वह प्रभात आ गया जिसने साध्वी समाधिप्रज्ञाश्रीजी की समाधि को नमन कर उनकी इस जीवन यात्रा को विराम देने का निर्णय कर लिया।

उस दिन सुबह से उन्हें तकलीफ बढ गई थी। सांस की गति भी असंतुलित हो रही थी। पूरा परिवार व श्री संघ हाथ जोडे उनकी आत्मा की भावी जिन्दगी के लिये मंगलकामना कर रहा था। उन्होंने दोपहर 2.30 बजे गुरुदेव से मांगलिक सुनने का संकेत किया। परिवार ने तुरंत व्यवस्था कर गुरुदेव से निवेदन किया।

गुरुदेव ने उनकी शारीरिक स्थिति देखकर समझ लिया कि पंछी अपना आवास छोडने की तैयारी कर चुका है। अत्यन्त वात्सल्य व अनुमोदना के भावों से भरकर गुरुदेव ने मांगलिक सुनाई... मंगल उद्बोधन दिया.. हितशिक्षाऐं प्रदान की... क्षमापना की।

अब उनकी सांसें धीरे-धीरे और कमजोर होती जा रही थी। आवाज बन्द हो गई थी। नवकार महामंत्र की धुन चल रही थी। उनके हाथ जुडे हुए थे। दोपहर 2.50 पर डॉक्टर ने उनके स्वर्गवास की सूचना दी।

उनकी दिव्य आत्मा नई दिशा... नया जन्म पाने बढ चली था। उनके अन्तर में एक ही संकल्प रमण करता था- मुझे महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेना है... परमात्मा सीमंधर प्रभु के हाथों संयम लेना है... आत्मा का निर्वाण करना है।

सूरिमंत्र की तीसरी पीठिका की साधना संपन्न

जयपुर 16 अक्टुबर। पूज्य गुरुदेव अर्वति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की सूरि मंत्र की तीसरी पीठिका की साधना ता. 16 अक्टूबर को महामांगलिक के साथ संपन्न हुई।

पूज्यश्री दूसरी बार यह साधना कर रहे हैं। इस साधना का प्रारंभ ता. 22 सितम्बर 2022 को हुआ था। पूज्यश्री की यह साधना 25 दिन सतत मौन, आयंबिल नीवी उपवास आदि तप व एकान्तवास के साथ संपन्न हुई।

इस संपूर्ण साधना का महान् लाभ जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष माननीय श्री चन्द्रप्रकाशजी प्रकाशचंदजी विजयकुमारजी लोढा परिवार ने लिया। उन्होंने पूज्यश्री का तिलक कर अपनी श्रद्धा समर्पित की।

ता. 16 अक्टूबर को तीसरी उपविद्या पीठिका की अधिष्ठायिका महालक्ष्मी के विशिष्ट पूजन के पश्चात् पूज्यश्री प्रातः ठीक 9 बजे साधना कक्ष से बाहर पधारे।

साधु-साध्वियों के अतिरिक्त हजारों की संख्या में भक्तगण बाहर प्रतीक्षा कर रहे थे। वे सभी पूज्यश्री के दर्शन पाकर धन्यता का अनुभव करने लगे।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् जयपुर शाखा की सदस्याओं ने भावनृत्य कर पूज्यश्री का स्वागत किया।

पूज्यश्री सकल श्री संघ के साथ पाण्डाल में पधारे। जहाँ समारोह का प्रारंभ हुआ।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने अपने मंगल प्रवचन में आत्मिक साधना की महिमा बतायी। उन्होंने कहा- पहली विद्या पीठिका जिसकी अधिष्ठायिका सरस्वती देवी है, की साधना बुद्धि वैभव प्रदान करती है, जबकि दूसरी महाविद्या पीठिका जिसकी अधिष्ठायिका देवी त्रिभुवन स्वामिनी है, वह यशस्वी बनाती है। तीसरी उपविद्या पीठिका जिसकी अधिष्ठायिका महालक्ष्मी है, वह वृद्धि देती है, चौथी मंत्र पीठिका जिसके अधिष्ठायक देव गणिपिटक यक्षराज है, वे शक्ति और पांचवीं मंत्राधिराज पीठिका जिसके अधिष्ठायक गणधर गौतमस्वामी है, वह लब्धि प्रदान करती है।

संचालन करते हुए गणि प्रवर श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने सूरिमंत्र के इतिहास का विशद वर्णन किया। औपपातिक सूत्र के मंतप्पहाणा की व्याख्या करते हुए कहा कि परमात्मा महावीर के अंतेवासी यानि शिष्य उस काल उस समय में मंत्र के भी जानकार होते थे। दो 2200 वर्ष पूर्व सुस्थितसूरि ने करोड वार से ज्यादा इस सूरिमंत्र का जाप किया था। तो 1000 वर्ष पूर्व श्री वर्धमानसूरि ने इस मंत्र का धरणेन्द्र देव की सहायता से प्रकट कर विधान किया था।

इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. ने कहा- पूज्यश्री तो एकान्त साधना में रत थे, पर हमें उनके सतत सानिध्य से वंचित रहना पडा। इसलिये उनकी सुखशाता पूछने से पहले हमारी सुखशाता पूछी जानी चाहिये।

पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ने कहा- पूज्यश्री में विरोधाभासी गुणों की भरमार है। उन्होंने कहा- पूज्यश्री सरल भी है तो कठोर भी है। वे सबके साथ सरल है, पर अपनी साधना के प्रति कठोर है।

पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. ने कहा- सूरि मंत्र की साधना जिनशासन व गच्छ की अभिवृद्धि के लिये की जाती है। पूज्यश्री जब भी सूरिमंत्र की साधना करते हैं, मांगलिक के अवसर पर दीक्षाओं व प्रतिष्ठाओं के मुहूर्त्त प्रदान किये जाते हैं। स्वयं मेरी दीक्षा का मुहूर्त्त भी पूज्यश्री की तीसरी पीठिका की साधना के अवसर पर घोषित हुआ था।

इस अवसर पर प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ने पूज्यश्री के गुणों की महिमा की। पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. ने पूज्यश्री के दिव्य व्यक्तित्व व कृतित्व पर गहराई से विवेचना की।

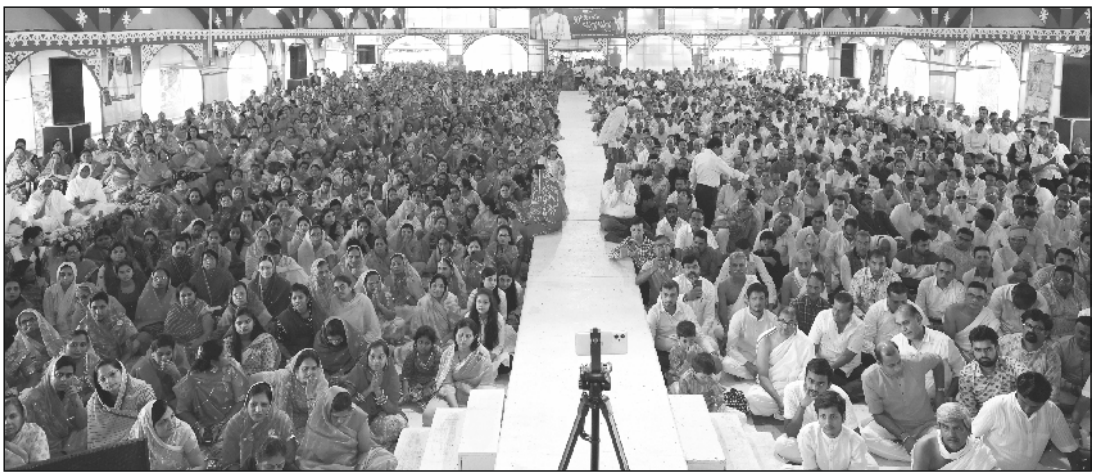

साध्वी श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी म. ने गीतिका प्रस्तुत की।

इस अवसर पर अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ के अध्यक्ष श्री रिखबचंदजी झाडचूर, सुश्री भावना संखलेचा, सुश्री साक्षी सिंघवी सांचोर, संघवी तेजराजजी गुलेच्छा, संस्कृत भाषा के महाविद्वान् व्याकरणाचार्य प्रोफेसर डॉ. श्रीधरजी मिश्र, शास्त्री कौशलेन्द्रदासजी, जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ जयपुर की ओर से श्री राजकुमारजी बेंगानी, जवाहरनगर संघ के श्री नितिनजी दुग्गड, दिल्ली के श्री उज्ज्वलजी फोफलिया आदि ने वक्तव्य दिया।

इस अवसर पर स्वर्णमुद्राओं द्वारा गुरुपूजन का लाभ मूल मोकलसर वर्तमान में गुंटुर, जोधपुर, इन्दौर निवासी श्री मेरामचंदजी हुण्डिया परिवार ने लिया। जबकि पूज्यश्री को रजतमय चावलों से बधाने का लाभ संघ अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाशजी प्रकाशचंदजी विजयकुमारजी लोढा परिवार ने लिया। जबकि स्फटिकमय गौतमस्वामी की प्रतिमा अर्पण करने का लाभ श्री विश्वासजी सौ. रेणुजी जैन गोठी परिवार ने लिया।

अंत में पूज्यश्री ने महामांगलिक सुनाई। लगातार चार घंटे से चल रहे इस समारोह में अंत तक पूरा पांडाल भरा हुआ था। गुरुभक्तों में मांगलिक हेतु उल्लास चरम पर था। आंखों को बंदकर भावविभोर होकर सभी ने सुना।

गुंटुर में प्रतिष्ठा 11 मई 2023 को

जयपुर 16 जयपुर। गुंटुर नगर में नवनिर्मित श्री कुंथुनाथ जिनमंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की प्रतिष्ठा ज्येष्ठ वदि 6 ता. 11 मई 2023 को पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

इस मंदिर दादावाडी का निर्माण पूजनीया समुदायाध्यक्षा महत्तरा पद विभूषिता श्री चंपाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से मूल मोकलसर निवासी श्री मेरामचंदजी हुण्डिया परिवार ने स्वद्रव्य से किया है।

ता. 16 अक्टूबर 2022 को महामांगलिक के अवसर पर अपने स्वजनों, परिजनों के साथ लगभग 200 श्रद्धालुओं को साथ लेकर हुण्डिया परिवार पूज्य गुरुदेवश्री के पास जयपुर पहुँचे।

उनकी विनंती को स्वीकार करते हुए पूज्यश्री ने यह शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मुहूर्त्त प्राप्त कर हुण्डिया परिवार हर्ष विभोर हो गया।

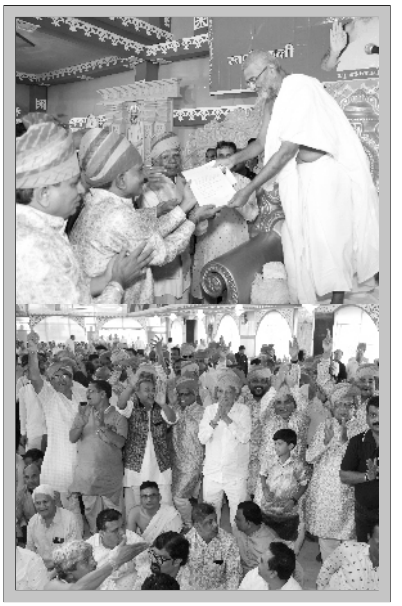

पू. बहिन म. के 45वीं ओली का पारणा

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के 45वीं वर्धमान तप की ओली का पारणा पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. के करकमलों से कार्तिक शुक्ल 12 शनिवार ता. 5 नवम्बर 2022 को बाडमेर नगर में कुशल वाटिका परिसर में सानन्द संपन्न हुआ।

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री ने संप्रेषित संदेश में कहा– बहिन म. निरन्तर तपस्या करके कर्मनिर्जरा कर रहे हैं। एक साल में दो से तीन ओलियाँ करके अपनी आत्मा को निर्मल बनाने का प्रयास कर रहे हैं। तप की जितनी अनुमोदना की जाय, उतनी कम है। उसका निरन्तर बढता हुआ भावोल्लास अनुमोदनीय है।

पू. बहिन म. की तपश्चर्या के पारणे के अवसर पर तेरापंथ समुदाय के महासतीजी परम विदुषी श्री अणिमाश्रीजी म. ने अपने संदेश में कविता की पंक्तियों में लिखा–

विद्युत् सम तेजस्वी जीवन, चमक रहा हर पल हर क्षण।
महक रहा तप-सुमनों से तेरा यह जीवन का गुलशन।
लिखना तप की नई ऋचाऐं स्वर्णिम अवसर आया है।।

इस अवसर पर एकत्रित श्रद्धालु समुदाय को संबोधित करते हुए पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ने कहा– वर्धमान तप हमारे भावों की विशुद्धि को भी निरन्तर वर्धमान करता है। वर्धमान शब्द का अर्थ है– लगातार बढता हुआ! उन्होंने कहा– तपस्या कर्मनिर्जरा का अमोघ उपाय है।

इस अवसर पर पूजनीया माताजी म., पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री आगमरुचिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री नमनरुचिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री तन्मयरुचिश्रीजी म. कुशल वाटिका के ट्रस्टी व श्रद्धालु लोग बडी संख्या में उपस्थित थे।

कुशल वाटिका में महापूजनों का आयोजन

बाड़मेर 29 अक्टूबर। बाड़मेर-अहमदाबाद रोड़ पर स्थित कुशल वाटिका प्रांगण में आगम ज्योति प्रमोदश्रीजी म.सा. के 124वें अवतरण दिवस के उपलक्ष में 26 अक्टूबर से 28 अक्टूबर तक त्रिदिवसीय भव्य महापूजन संपन्न हुए। कुशल वाटिका प्रांगण में चातुर्मासार्थ विराजित खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की आज्ञा से, बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से माताजी म. साध्वी रतनमालाश्रीजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में प्रथम दिन प्रात: 10.30 बजे अनंत लब्धिनिधान गौतम स्वामी महापूजन का आयोजन किया गया, जिसका लाभ धाईदेवी मेवाराम रूगामल घीया परिवार भिंयाड़ हाल सूरत द्वारा लिया गया।

महापूजन में विधिकारक राजु भाई मलकापुर द्वारा मंत्रोच्चार व भक्ति के माध्यम से महापूजन करवाया गया। आरती का लाभ रतनलाल केशरीमल संखलेचा परिवार व मंगल दीपक का लाभ बाबुलाल टीलचन्द बोथरा परिवार द्वारा लिया गया।

दूसरे दिन भगवान मुनिसुव्रत स्वामी के विशिष्ट मंत्रोक्षरों से युक्त शांतिधारा स्तोत्र से अभिषेक का आयोजन किया गया। परमात्मा के पांच अभिषेक, जिसमें प्रथम अभिषेक का लाभ मेवाराम बोथरा परिवार अरणियाली वाले हाल धोरीमन्ना, द्वितीय अभिषेक प्रकाशचन्द बाबुलाल लूणिया परिवार, तृतीय अभिषेक धाईदेवी शंकरलाल सेठिया, चतुर्थ अभिषेक शांतिलाल भंसाली परिवार व पांचवां अभिषेक रतनलाल केशरीमल संखलेचा व बाबुलाल टीलचन्द बोथरा परिवार द्वारा लिया गया।

तीसरे दिन खरतरगच्छ की अधिष्ठायक देवी अम्बिका माता के महापूजन कार्यक्रम हुआ सम्पन्न हुआ। गौतम स्वामी के महापूजन से लब्धि की प्राप्ति होती है और शांतिधारा अभिषेक से घर परिवार में शांति का वास होता है व अन्तिम दिन अम्बिका देवी की आराधना से सकल संघ के शांति की कामना की गई।

अम्बिका देवी महापूजन का सम्पूर्ण लाभ बाबुलाल, मनोजकुमार, विशाल बेटा पोता शिवलालचन्द बोथरा परिवार बाड़मेर हाल अहमदाबाद द्वारा लिया गया है। त्रिदिवसीय महापूजन में विधिकारक राजु भाई मलकापुर द्वारा मंत्रोच्चार व भक्ति-भावना के साथ महापूजन करवाया गया।

इस दौरान कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल के साथ केयुप व केएमपी, केबीपी भी उपस्थित रहा। त्रिदिवसीय महापूजन के समापन के कार्यक्रम में कुशल वाटिका उपाध्यक्ष रतनलाल संखलेचा द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस दौरान कुशल वाटिका संस्थान के उपाध्यक्ष द्वारकादास डोसी, उपाध्यक्ष रतनलाल संखलेचा, कोषाध्यक्ष बाबुलाल टी. बोथरा, ट्रस्टी जगदीशचन्द भंसाली पाली, मांगीलाल संखलेचा, मांगीलाल बोथरा, बाबुलाल बोहरा, भैरव मालू सहित कई भक्तगण उपस्थित थे।

प्रेषक- कपिल माल

डुठारिया में संयम स्वर्णोत्सव

डुठारिया 1 नवंबर। श्री डुठारिया की धन्य धरा पर परमात्मा श्री आदेश्वर भगवान और दादा श्री जिनकुशलसूरि गुरुदेव की छत्रछाया में गुरु भगवंतों का चातुर्मास बहुत ही आराधनामय वातावरण में चल रहा है।

श्री संघ डुठारिया का अहोभाग्य है कि छाजेड कुलदीपक आचार्य भगवंत श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. सा. का 50वे संयम वर्ष में प्रवेश महोत्सव के आयोजन का लाभ डुठारिया श्री संघ को मिल रहा है। इस उपलक्ष में दो दिन का महोत्सव डुठारिया में रखा गया है। ता. 09/11/2022 बुधवार को दादावाडी में दादा गुरुदेव का महापूजन और विदाई समारोह का आयोजन रखा गया है। ता. 10/11/2022 को हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति मे डुठारिया मे स्वर्णिम संयमोत्सव का उत्सव उत्साह के साथ मनाया जायेगा।

गौड़ी पार्श्वनाथ मन्दिर में धर्मशाला का भूमिपूजन व खाद मुहूर्त सम्पन्न

बाड़मेर 30 अक्टूबर। लंगेरा रोड़ पर श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छीय हाला जैन संस्थान द्वारा निर्मित श्री गौड़ी पार्श्वनाथ मन्दिर प्रांगण में नूतन धर्मशाला भवन का भूमिपूजन व खाद मुहूर्त दि. 30/10 को सम्पन्न हुआ। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद व आज्ञा से पूज्या बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में नूतन धर्मशाला के निर्माण के लिए सकल जैन श्री संघ व हालावाला समाज की उपस्थिति में भूमि पूजन करते हुए चांदी के पावड़े से खाद मुहूर्त किया गया। भूमि पूजन का लाभ श्रीमती प्यारीदेवी धर्मपत्नी मांगीलाल, गौतमकुमार, विकासकुमार गोलेच्छा हालावाला परिवार बाड़मेर हाल मुम्बई-इरोड़ द्वारा व खाद मुहूर्त का लाभ श्रीमती कृष्णादेवी धर्मपत्नी श्रद्धेय गोरधनदास, नरेन्द्रकुमार, रविन्द्रकुमार रतनपुरा बोहरा हालावाला परिवार बाड़मेर हाल बैंगलोर द्वारा लिया गया। इस भूमिपूजन व खाद मुहुर्त के पश्चात धर्मसभा का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में जयपुर, फालना, ब्यावर, दिल्ली, बैंगलोर, भिवंडी, सूरत, अहमदाबाद, ईरोड़, बाड़मेर सहित कई शाखा से संघ के सदस्य पधारे और अध्यक्ष रविन्द्रकुमार रतनपुरा ने बाहर से पधारे हुए शाखा सदस्यों व अतिथियों का हार्दिक स्वागत करते धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह धर्मशाला तीन मंजिला वातानुकुलित भव्य बनेगी और उसका कार्य जल्द करवाया जायेगा।

कार्यक्रम में जैन श्री संघ अध्यक्ष प्रकाशचन्द वडेरा, कुशल वाटिका अध्यक्ष भंवरलाल छाजेड़, हालावाला संघ पूर्व अध्यक्ष निहालचन्द चौपड़ा, हाला जैन संस्थान शाखा बाड़मेर संयोजक विरधीचन्द छाजेड़ हालावाला, अध्यक्ष रविन्द्र जैन रतनपुरा, उपाध्यक्ष भंवरलाल पारख जयपुर, सचिव गौतमचन्द बुरड़ बनारस, कोषाध्यक्ष दिनेश बुरड़ ब्यावर, मुम्बई शाखा अध्यक्ष अशोक गोलेच्छा, विनोद पारख बैंगलोर व केयुप व सकल श्री संघ व हालावाला श्री संघ सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

प्रेषक- कपिल मालू, कैलाश हालावाला

पूज्यश्री की निश्रा में देराउर में मेला व प्रतिष्ठा

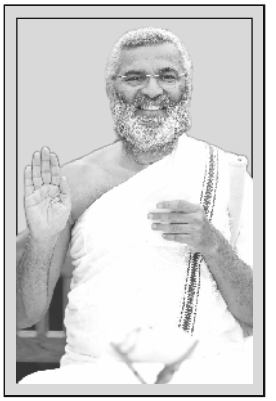

जयपुर 30 अक्टूबर। जयपुर के निकट देराउर तीर्थ जहाँ तीसरे दादा जिनकुशलसूरि के अग्निसंस्कार स्थल से लायी गई मिट्टी स्थापित है, वहाँ पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया मरुधरज्योति साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल के पावन सानिध्य में तीसरे दादा श्री जिनकुशलसूरि की जन्म तिथि के उपलक्ष्य में ता. 13 नवम्बर 2022 रविवार को भव्य मेले का आयोजन किया गया है। लाभार्थी सुनीत लक्ष्मीचंदजी-सरिताजी यश प्रिया एवं समस्त भंसाली परिवार है।

साथ ही अगले रविवार ता. 20 नवम्बर 2022 को चौथे दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की प्राचीन चरणपादुका को प्रतिष्ठित किया जायेगा। प्रतिष्ठा समारोह के लाभार्थी पौत्र अरिहंत अर्हम् के जन्मोत्सव के उपलक्ष में श्री ऋषभकुमारजी-उषाजी, अभिषेकजी-प्रियंकाजी, अभिनवजी-अदितिजी, आराध्या आरना एवं समस्त चौधरी परिवार ने लिया है।

खरतरगच्छ पेढी की साधारण सभा संपन्न

जयपुर 30 अक्टूबर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की वार्षिक साधारण सभा संपन्न हुई। पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. एवं पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि का सानिध्य प्राप्त हुआ। अध्यक्षता संरक्षक श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने की।

महामंत्री श्री पदमजी टाटिया ने वर्ष भर की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

विक्रमपुर व खेतासर में जो पेढी द्वारा नूतन जिनमंदिर दादावाडी आदि का निर्माण कार्य किया गया, वहाँ यात्रियों की संख्या में अभिवृद्धि हो रही है।

दूसरे दादा मणिधारी दादा श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की जन्मभूमि विक्रमपुर है। और चौथे दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की जन्मभूमि खेतासर है। ये दोनों ही तीर्थ हैं। यहाँ ज्यादा से ज्यादा आवागमन बढे, इस हेतु प्रचार-प्रसार पर जोर दिया जाए। विविध दादावाडियों में पेढी द्वारा दिये गये सहयोग का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया।

पूज्यश्री के मंगल पाठ के साथ सभा का समापन हुआ।

पालीताणा हरि विहार धर्मशाला में मांगलिक

पालीताना 26 अक्टुबर। श्री जिनहरि विहार धर्मशाला स्थित मयूराकार जिनमन्दिर में प. पू. महत्तरापद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि सभी साध्वी मण्डल की निश्रा में कार्तिक सुदि एकम को प्रातः काल की शुभ वेला में जिनालय का द्वारोद्घाटन एवं परमात्मा के निर्वाण कल्याणक, गुरु गौतम स्वामी के केवलज्ञान के उपलक्ष में मोदक चढाये गए। लाभार्थी श्री बाबूलाल भुरचन्दजी लूणिया परिवार धोरीमना-अहमदाबाद रहे। चैत्यवन्दन करवाकर नूतन वर्ष का मांगलिक और गुरु गौतम स्वामी रास आदि का वाचन किया गया।

हैदराबाद में चातुर्मास का ठाठ

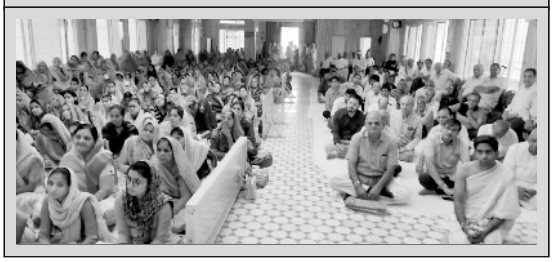

हैदराबाद 30 अक्टूबर। मोतियों की नगरी में फीलखाना श्री महावीर स्वामी जैन श्वेताम्बर संघ के तत्त्वावधान में महावीर भवन के प्रांगण में पू. गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्यायें पू. साध्वी प्रियंवदाश्रीजी म.सा. पू. साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में चातुर्मास प्रवेश से ही सभी का मन हर्षित है। पूरे संघ में चातुर्मासिक, आराधना, साधना, तप-त्याग का ठाठ बड़े ही हर्षोल्लास के साथ चल रहा है।

चातुर्मास का प्रारंभ होते ही नित्य प्रतिदिन मोक्षमार्ग के 21 सोपान (सिन्दुर प्रकरण पर आधारित) ग्रंथ पर साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म.सा. द्वारा तात्त्विक और मार्मिक प्रवचन चल रहे है। साथ ही सम्यग्दर्शन पर साध्वी प्रमुदिताश्रीजी के द्वारा हम सम्यग्दर्शन को कैसे प्राप्त करें, उसके क्या-क्या भूषण और दूषण है उसका विवेचन सरल, सुबोध भाषा शैली में विवेचन किया जा रहा है। नित्य प्रतिदिन तत्वज्ञान की कक्षायें, महिला शिविर और बालक-बालिकाओं के शिविर आदि का आयोजन में बड़ी संख्या में सभी भाग ले रहे है।

तत्पश्चात् अनेक कार्यक्रम जिनशासन महान, अहो ब्रह्मचर्यम्, नेमिनाथ प्रभु जन्म कल्याणक का स्टेज प्रोग्राम, संयम उपकरण वंदनावली, गिरनार भावयात्रा, फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता आदि में सभी ने भाग लिया।

चातुर्मास दरम्यान विशाल संख्या में आराधकों ने तपाराधना की। पू. साध्वी योगांजनाश्रीजी म.सा. के 57 वर्धमान तप की ओली पारणा किया। 200 से अधिक पुरुष और महिलाओं ने संयम तप की 35 दिवसीय आराधना की। 5 सिद्धि तप, 108 पार्श्वनाथ के उपवास, 150 छठ, सामूहिक अट्ठम तप, सांकली तेला व आर्यंबिल तप की आराधना सानंद सम्पन्न हुई।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना के अन्तर्गत साध्वीजी के मुखारविन्द से जिनशासन ध्वज की महत्ता समझाई और तपस्वियों के द्वारा ध्वज वंदन करके उसी की साक्षी में हमारे जिनशासन के प्रति वफादार रहेंगे ऐसे शपथ-ग्रहण करके पर्वाधिराज पर्युषण की आराधना का शुभारंभ किया गया। पू. साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म., प्रमुदिताश्रीजी म. के मुखारविन्द से अष्टान्हिका प्रवचन में श्रावक के करने योग्य 5 कर्तव्य और वार्षिक कर्तव्यों की सारगर्भित विवेचना की एवं अष्टप्रकारी पूजा के चढ़ावों में सभी ने खूब बढ-चढकर हिस्सा लिया।

कल्पसूत्र के पोथाजी के चढ़ावे, भक्ति, ज्ञान पूजा और उसका वांचन संघ के समक्ष गुरुवर्याश्री के मुखारविन्द से कल्पसूत्र का श्रवण कराया गया। चौदह स्वप्नों के चढ़ावे एवं पालनाजी की भक्ति लाभार्थी परिवार के गृह आंगन में की गई। स्थानीय मंडलों द्वारा सभी कार्यक्रमों में सुचारु रूप से व्यवस्था की गई।

बारसा सूत्र का वांचन साध्वी मननप्रियाश्रीजी म. द्वारा किया गया। संवत्सरी पर्व के दिन 100 से अधिक महिलाओं एवं पुरुषों ने पौषध व्रत ग्रहण किया। जाने-अनजाने में कुछ भी गलती हो गई हो उसका मिच्छामि दुक्कड़ गुरुवर्याश्री के द्वारा दिलाया गया। चैत्यपरिपाटी के लिए संघपति सहित शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय के दर्शनार्थ संघ के साथ गये।

तेले से ऊपर सभी तपस्वियों का पारणा महावीर भवन में सम्पन्न हुआ। तपस्वियों के अनुमोदनार्थ 40 अट्ठाई

150 छठ अठम, सिद्धि तप, 11, 9 उपवास के तपस्वियों का वरघोडा, बहुमान संघ के द्वारा उनको अर्पण किया।

साध्वी मननप्रियाश्रीजी के द्वारा अरिहंत टॉवर, आदिनाथ मंदिर में पर्युषण पर्व की आराधना करवाई गई। ट्रस्ट मंडल सहित संघ की उपस्थिति सभी कार्यक्रम में रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री उत्तमजी संकलेचा के द्वारा किया गया।

संस्कार शिविर- महावीर भवन के आराधना भवन के प्रांगण में पू. सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्यायें प.पू. साध्वी प्रियंवदाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में आसोज वदि तेरस शुक्रवार को 108 दादा गुरु इकतीसा के जाप का अयोजन किया गया। इसका लाभ मनीषकुमारजी प्रशांतकुमारजी श्रीश्रीमाल परिवार द्वारा लिया गया।

पंच दिवसीय 12-25 वर्ष की युवतियों, बालिकाओं के लिए एवं 6-11 वर्ष के बालक-बालिकाओं के लिए संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। सुबह 9 बजे से 4 बजे तक 125 शिविरार्थीयों ने भाग लिया।

साध्वीजी शुद्धांजनाश्रीजी द्वारा जिनमंदिर और परमात्मा पूजा के बारे उद्‌बोधन दिया गया। साध्वीजी योगांजनाश्रीजी म. द्वारा हमारी 'जीवन शैली' क्या है, आहारचर्या, परिवार के प्रति हमारा कर्तव्य के बारे में समझाया। साध्वी प्रमुदिताश्रीजी ने 'जैन धर्म का प्रारंभिक ज्ञान, जैन भूगोल, जीव के प्रकार, नवतत्त्व, कर्म सिद्धांत' आदि के बारे में उद्‌बोधित किया। आर्ट एंड क्राफ्ट, गहुंली, रंगोली, ध्यान, योगा, गेम्स एंड प्रश्नोत्तरी आदि के बारे में समझाया और विविध पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। शिविर के दौरान जिनशासनप्रेमी जैन मिडिया के प्रमुख वक्ता मेहुलभाई चैन्नई से पधारे और उन्होंने आज की पीढ़ी के बारे में प्रस्तुति दी।

नवपद ओली की आराधना- नवपदजी की ओली की आराधना सानंद सम्पन्न हुई। इसमें 150 से अधिक संख्या में आराधकों ने भाग लिया। साध्वीजी शुद्धांजनाश्रीजी और प्रमुदिताश्रीजी के द्वारा 'नवपद और श्रीपाल मयणा चरित्र'' के ऊपर प्रवचन किया। आराधना के साथ-साथ 24 घंटे का अखंड नवकार मंत्र का जाप महिला, पुरुष और बच्चों के द्वारा किया। अंतिम दिवस सिद्धाचल महापूजन का आयोजन किया गया। बहुमानपूर्वक ओलीजी के तपस्वियों का पारणा संपन्न हुआ। नवपद ओली की आराधना चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर बेगम बाजार में साध्वी मननप्रियाश्रीजी द्वारा करवाई गई।

समस्त कार्यक्रम का सफल संचालन श्री उत्तमजी संकलेचा एवं चातुर्मास संयोजक विक्रमसिंह जी ढड्‌ढा द्वारा किया गया। सभी कार्यकारिणी और सदस्यों का संपूर्ण योगदान कार्यक्रम को सफल बनाने में रहा।

तिरपातुर में तपस्या जारी

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती स्थविर मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. सा. एवं गणिवर्य श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं गच्छगणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. की शिष्या पू. साध्वी प्रीतिसुधाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में तिरपातुर नगर में उल्लासपूर्वक चातुर्मास की आराधना चल रही है। अभी तक तपस्या की शृंखला गतिमान है। आठ उपवास की तपस्या चालु है।

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के संयम स्वर्ण वर्ष के निमित्त तिरपातुर नगर से तेनमपट नगर का छःरी पालित संघ ले जाने की घोषणा की गई। पूज्यश्री ने गुरुदेव द्वारा प्रदान किये हुए मुहूर्त को चतुर्विध संघ के समक्ष घोषणा की।

संकलन- पूजा कपिल मेहता

पाली में विविध आयोजन

पाली 26 अक्टूबर। श्री जिनकुशलसूरि जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, पाली के तत्वावधान में पूज्या पार्श्वमणि तीर्थप्रेरिका गच्छगणिनी सुलोचनाश्रीजी म. सा. की शिष्या मधुरभाषी पू. साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म.सा., पू. साध्वी प्रियदिव्यांजनाश्रीजी म. एवं पू. साध्वी प्रियशुभांजनाश्रीजी म. ठाणा 3 के सानिध्य में कई प्रोग्राम का आयोजन हुआ।

दि. 11.10 को शक्रस्तव अभिषेक महापूजन का आयोजन किया गया। इस महापूजन में औषधियों से परमात्मा का पूजन-अभिषेक किया गया। सभी ने मंत्रोच्चार और गीत-स्तवन के साथ जयकारे लगाते हुए अभिषेक-पूजन किया। पूजन का लाभ जगदीशचंदजी रतनकुमारजी रितेश कुमारजी अमित कुमार जी गौरवजी बोथरा परिवार ने लिया।

दि. 12.10 को श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा का आयोजन किया गया। लाभ रिखबदास रतनलाल डॉ. जितेन्द्र कुमार अक्षय विवेक रजत अभिनंदन मालू परिवार ने लिया।

दि. 13.10 को दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई। पूजा के लाभार्थी बाबूलाल कन्हैयालाल भूरचंद ललित नरेश मालू रहे।

दि. 18.10 से 8 दिवसीय भगवान की अंतिम देशना उत्तराध्ययन सूत्र के प्रथम अध्ययन विनय श्रुत के पारायण और वीर स्तुति से किया। साध्वीजी ने कहा कि इस सूत्र में भगवान महावीर की उन शिक्षाओं का संकलन है जिनको आत्मसात करने से जीवन की दशा और दिशा बदल जाती है।

दि. 26 अक्टूबर 2022 को नूतन वर्ष की वेला में प्रातः श्री गौतम रास महामांगलिक, श्री महावीर स्वामी का निर्वाण लड्डू व गौतम स्वामी के केवलज्ञान का लड्डू एवं श्री दादा गुरुदेव के प्रसाद का लड्डू चढ़ाया गया।

कार्यक्रम में संरक्षक जगदीश छाजेड़, बंशीधर डोशी, बाबुलाल संखलेचा, संयोजक जगदीश बोथरा, अध्यक्ष जगदीश भंसाली, सचिव संपत संखलेचा, सह संयोजक प्रेमप्रकाश धारीवाल, ओमप्रकाश बोहरा, रतन धारीवाल, बाबुलाल धारीवाल, रतन मालू, बाबुलाल छाजेड़, संपत बोथरा, पवन धारीवाल, संदेश गुलेच्छा, रमेश छाजेड़, गौतम लूणिया, भगवानदास छाजेड़, पवन भंसाली, जगदीश मालू, हस्तीमल छाजेड़, प्रकाश धारीवाल, रितेश छाजेड़, अनिल सेठिया आदि श्रावक श्राविका मौजूद रहे।

श्रीमती पारस बाई संचेती की तपस्या

संचेती परिवार के श्रीमती पारसबाई ने भद्र तप की महान् तपस्या की। लगभग तीन माह चलने वाले इस महान् और उग्र तप का पारणा ता. 17 अक्टूबर 2022 सोमवार को संपन्न हुआ। 100 दिवसीय तप में 75 उपवास एवं 25 दिवस पारणे होते हैं। चतुर्विध संघ ने तपस्वी की हार्दिक अनुमोदना की।

साध्वी शुभंकराश्रीजी म. का सुयश

नवापारा राजिम 8 अक्टूबर। श्वेताम्बर जैन मंदिर प्रांगण में 8 अक्टूबर को प्रातः 9 बजे महत्तरा पद विभूषिता मनोहरश्रीजी महाराज की शिष्या चातुर्मासार्थ विराजित नवकार जपेश्वरी पूज्या साध्वी शुभंकराश्रीजी म. का गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नामांकन निमित्त गुरु बधावणा मंगल महोत्सव आयोजन किया गया। जिसमें विशेष अतिथि के रूप में अणुव्रत सेवी प्रो. डॉ. ललिता बी. जोगड़ (मुंबई) एवं उपासक प्रवक्ता एड. सुनीलानंद नाहर (मेहकर), स्थानीय विधायक धनेन्द्र साहू उपस्थित रहे। समारोह में सरलमना साध्वी सुभद्राश्रीजी एवं सेवाभावी ज्ञानोदयाश्रीजी ने अपनी सानिध्यता प्रदान की। गुरु बधावणा कार्यक्रम में गुरुभक्ति शब्दांजलि हेतु सीए संतोष जैन बडेर (दुर्ग) एवं गुरुभक्ति स्वरांजलि हेतु सुश्री कोमल गोलछा (फलोदी) उपस्थित रही। अनेक शहरों के नवकार दरबार भक्तगण ने भी शिरकत की।

नवकार दरबार का आयोजन- महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की सद्प्रेरणा से नवकार जपेश्वरी शुभंकराश्रीजी म. द्वारा प्रतिवर्ष वर्षावास स्थल पर 68 दिवसीय नवकार जाप दरबार लगता है। जहां प्रतिदिन श्रावक-श्राविकाओं द्वारा नवकार महामंत्र का जाप किया जाता है। धमतरी नगर से प्रारंभ होकर यह दरबार अब तक भिलाई 3, दुर्ग, राजनांदगांव, महासमुंद, बकेला, पंडरिया, मुंगेली, रायपुर, अहिवारा, बालाघाट, महासमुंद, कोलकाता नगरों से होता हुआ 26वें दरबार के रूप में यह विधान नवापारा नगर में चल रहा है। जाप के इस लगातार क्रम को गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नामांकन का श्रेय नवापारा नगर को प्राप्त हुआ। स्थानीय जैन श्वेताम्बर श्री संघ एवं चातुर्मास व्यवस्था समिति ने इसे सफल बनाया।

रामगंज मंडी में कीर्तिमान

रामगंजमंडी (जिला कोटा) 1 नवंबर। बाजार नं. 3 में स्थित जैन श्वेताम्बर श्री संघ की विनती पर पूज्या साध्वीवर्या गुणरंजनाश्रीजी म. सा. का ऐतिहासिक भव्य चातुर्मास पूर्ण होने पर है। चातुर्मास की स्वीकृति पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ-सूरीश्वरजी म. ने प्रदान की।

चातुर्मास में महामृत्युंजय तप की आराधना (30 उपवास) श्री गौरव बाफना एवं श्री सौरभ तिल्लानी द्वारा की गई। 11 उपवास पांच जन, 8 उपवास दस जन ने की। सांकली तेला व आयंबिल निरंतर जारी है।

चातुर्मास प्रवेश, दादा गुरु श्री जिनदत्तसूरि पुण्यतिथि पर पूजन, गौतम स्वामी की आराधना निमित्त 150 एकासना, श्री शंखेश्वर पार्श्वप्रभु के 45 तेले, पुणिया श्रावक की 200 सामायिक आदि अनेक आराधना मय समारोह संपन्न हुए।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व धूमधाम से मनाया गया। नवकार मंत्र की सामूहिक 9 दिवसीय एकाशने से आराधना व भव्य वरघोड़ा निकाला गया। चार्तुमास में दादा गुरुदेव की 11 महापूजन, सिद्धचक्र महापूजन, सरस्वती महापूजन, नाकोडा भैरव महापूजन, महालक्ष्मी महापूजन, घंटाकर्ण महावीर महापूजन, क्षेत्रपाल भैरव देव महापूजन, अंबिका देवी महापूजन आदि हुए। सामूहिक ओली की तपस्या हुई जिसमें बाहर से भी तपस्वी आये कुल संख्या 50 हुई। बच्चों एवं 26 से 50 वर्ष के लोगों एवं महिलाओं का धार्मिक शिविर लगा।

इस प्रकार अनेक आराधना एवं प्रवचन के माध्यम से आसपास के निवासी एवं गुरुभक्त भी परम लाभान्वित हो रहे है। कार्तिक पूर्णिमा को सिद्धाचल भाव यात्रा एवं दादा गुरुदेव का महापूजन होगा।

समाजोपयोगी भवन का भूमिपूजन और खनन मुहूर्त संपन्न

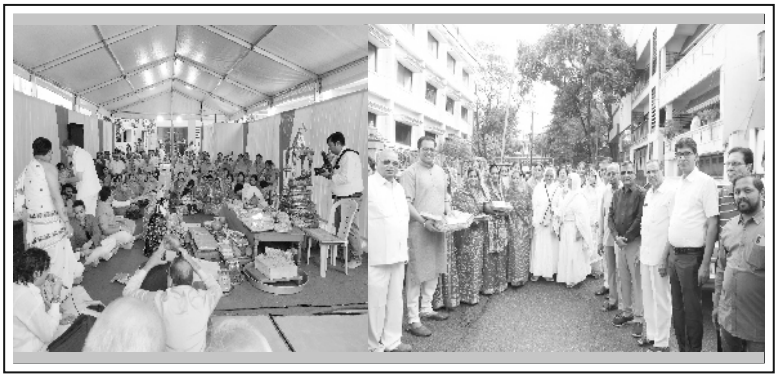

बेंगलूरु 5 अक्टुबर। श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुडी बैंगलोर के तत्वावधान में पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब की आज्ञा से नूतन समाजोपयोगी भवन के भूमिपूजन और खनन मुहूर्त पूज्या साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में शुभ मंगल वेला में सम्पन्न हुआ।

दादावाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्भयलालजी गुलेच्छा ने पधारे हुए आगंतुकों का स्वागत किया। परमात्मा का भव्य स्नात्र महोत्सव श्री जिनकुशलसूरि महिला सेवा मंडल द्वारा पढ़ाया गया। प्रवचन के पश्चात दादावाड़ी आराधना भवन से नूतन भवन की जगह की ओर लाभार्थी परिवारों के साथ भूमिपूजन और खनन मुहूर्त हेतु बाजते गाजते सकल संघ के साथ प्रस्थान हुआ।

शुरुआत श्री जिनदत्त कुशल सूरि जैन संगीत मंडल के सदस्य सनी रांका द्वारा मंगलाचरण से हुई। गच्छाधिपतिजी द्वारा प्रदत्त मुहूर्त के अनुसार दोपहर में शुभ मंगल घड़ियों में भूमि पूजन और खनन मुहूर्त विधि प्रारम्भ हुई, तत्पश्चात सकल संघ का स्वामी वात्सल्य आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मंडल के मंत्री ललित डाकलिया ने भूमिपूजन के लाभार्थी परिवार श्रीमती शान्ति देवी चुन्नीलालजी गुलेच्छा परिवार मोकलसर बैंगलोर निवासी और खनन विधि के लाभार्थी कुशलराजजी प्रमोदकुमारजी गुलेच्छा परिवार मोकलसर बैंगलोर निवासी की संक्षिप्त में जानकारी देकर कहा कि अपने लिए तो घर सभी बनाते हैं लेकिन समाज के उपयोग हेतु बनने वाले भवन में अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग करने वाले विरले ही होते हैं।

कार्यक्रम की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री जिनदत्त कुशल सूरि जैन सेवा मंडल के सदस्यों ने बखूबी सम्हाली। इस अवसर पर गुरुवर्याश्री जी ने संघ को और लाभार्थी परिवारों को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम का सम्पूर्ण विधिविधान रोहित भाई ने मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया। कार्यक्रम में दादावाड़ी से जुड़ी समस्त संस्थाओं के पदाधिकारी और सदस्यों सहित सकल संघ हर्षोल्लास के साथ उपस्थित था।

शिलान्यास मुहूर्त सम्पन्न- श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुडी बैंगलोर के तत्वावधान में पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज की आज्ञा से बनने जा रहे समाजोपयोगी भवन के शिलान्यास मुहूर्त कार्यक्रम पूज्या साध्वी मंजुलाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में 4 नवंबर को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में विमलनाथ जिनालय दादावाड़ी से पूज्य साध्वीवर्याओं, लाभार्थी परिवार और सकल संघ के साथ नूतन भवन की जमीन तक वरघोडे के रुप में गाजते बाजते पदार्पण हुआ। दादावाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्भयलालजी गुलेच्छा ने पधारे हुए समस्त आगंतुकों का स्वागत किया। ट्रस्ट के महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा ने कहा कि जो भवन बनने जा रहा है वहां समाज के उपयोग हेतु हॉल, कमरे और भोजनशाला का निर्माण किया जाएगा जहां पर शुद्ध सात्विक भोजन की व्यवस्था हो सके। भवन की जमीन पर श्री जिनकुशलसूरि जैन महिला मंडल द्वारा परमात्मा का भव्य स्नात्र

महोत्सव मनाकर शुभ मुहूर्त में तुषार भाई के द्वारा विधिविधान से शिलान्यास का कार्यक्रम लाभार्थी परिवार संघवी श्रीमती कमलादेवी रुपचन्द जी, दिनेशकुमारजी - गीताजी आदितकुमारजी पालरेचा परिवार, मोकलसर - बैंगलोर निवासी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए खरतरगच्छ संघ के मंत्री अरविन्द कोठारी ने कहा कि यह भवन आगामी दो वर्षों में बनकर उद्घाटन के लिए तैयार हो जाएगा। ट्रस्ट मंडल द्वारा लाभार्थी पालरेचा परिवार का अभिनन्दन किया। श्री जिनदत्त कुशलसूरि जैन सेवा मंडल के सदस्यों ने शिलान्यास संबंधित और स्वामीवात्सल्य की व्यवस्थाएं सम्हाली और उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति प्रदान करके जिनशासन की शोभा बढाई इसके लिए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर गुन्टूर श्रीसंघ से सुखराजजी दलपतराजजी हुण्डिया परिवार से भी सदस्य पधारे।

इस अवसर पर दादावाड़ी ट्रस्ट के ट्रस्टी एवं सदस्यों के साथ दादावाड़ी से जुड़ी समस्त संस्थाओं के सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा ने पधारे हुए समस्त सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

खरतरगच्छ महासभा के चुनाव संपन्न

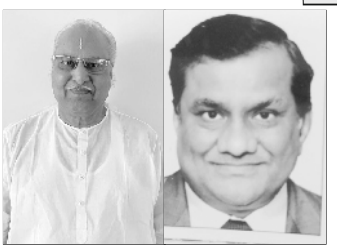

जयपुर 30 अक्टूबर। अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा के चुनाव में श्री मोहनचंदजी ढड्ढा चेन्नई संरक्षक, श्री प्रकाशचंदजी सुराणा रायपुर निवासी सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुने गये। कानूगो श्री प्रकाशचंदजी बोथरा मुंबई वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री पदमजी टाटिया चेन्नई महामंत्री, श्री पदमचंदजी बरडिया दुर्ग सहमंत्री चुने गये। शेष पदाधिकारियों व कार्यकारिणी की घोषणा शीघ्र ही की जायेगी।

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 30 अक्टूबर 2022 को जयपुर मोहनवाडी स्थित अरिहंत वाटिका में महासभा की साधारण सभा की बैठक हुई। सभा की अध्यक्षता महासभा के अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने की।

गच्छ की वर्तमान स्थिति के संदर्भ में सदस्यों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। सभा के अन्त में श्री ढड्ढाजी ने ट्रस्ट मंडल का कार्यकाल पूर्ण होने पर चुनाव की कार्यवाही प्रारंभ की। उन्होंने वर्तमान वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री प्रकाशचंदजी का नाम अध्यक्ष पद हेतु प्रस्तावित किया जिसे सदन ने सर्वसम्मति से पारित किया।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई।

खरतरगच्छ महिला परिषद, मंदसौर की नई कार्यकारणी

मार्गदर्शिका: श्रीमती गुणमालाजी खिमेसरा, संरक्षिका: इंदु जी कोठारी, अध्यक्षा: दीपा बाफना, उपाध्यक्षा: सुनीताजी कोठारी, सचिव: पायल जी कोठारी, सह सचिव: सारिका नाहटा, कोषाध्यक्षा: मंजूजी कोठारी।

कार्यकारिणी: सुनीताजी राठौड़, सुभद्राजी डोसी, मीनाजी बोथरा, खुशबूजी मारू, अंबरजी लोढ़ा, नेहाजी डोसी, सरोजजी छाजेड़, श्रेयाजी सकलेचा, शिखाजी कोठारी।

जिंदगी का सफर....

लकड़ियों से खेलने से लेकर, लकड़ियों में जलाए जाने तक।
बच्चे में मिट्टी में खेलने से लेकर, वजूद के मिट्टी में मिल जाने तक।
माँ के स्तनपान से लेकर, आखिरी गंगाजल के पान तक।
चंदन के तिलक से लेकर, मुख पर चंदन रखकर शरीर के दहन तक।

खेतिया नगर में चातुर्मास का ठाठ

खेतिया 20 अक्टूबर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया समुदायाध्यक्षा श्री चंपाश्रीजी म. सा. पू. जितेन्द्र श्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 का खेतिया नगर में चातुर्मास की आराधना उल्लास के वातावरण में संपन्न हो रही है। यहाँ ज्ञान, ध्यान, तप, और विविध कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है।

यहाँ साध्वीजी म. की प्रेरणा से हर रविवार को विशेष प्रवचन व कार्यक्रम रखे गए। जैसे- माँ की ममता, अष्टापद की भावयात्रा, खरतरगच्छ दिवस का महत्त्व, छः आवश्यक का सार, खोले मोक्ष का द्वार, पंच परमेष्ठी का ध्यान, नरक दर्शन और कौन बनेगा ज्ञानाधिपति?

पू. चारुलता श्रीजी म. द्वारा चार दिवसीय नेम राजुल कपल शिविर एवं चातुर्मास में रोज सुबह श्रावकों की कक्षा, दोपहर में श्राविका कक्षा संचालित की गई। रविवार को बच्चों का शिविर व श्रावकों की सामूहिक सामयिक के साथ शिविर का आयोजन किया गया। हर गुरुवार को प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। श्रावकों का श्री जिनकुशल सामायिक मंडल की स्थापना की गई।

चातुर्मास में तपश्चर्या का ठाठ लगा। ३ मासक्षमण सौ. हर्षिता नाहर, सौ. पूजा पारख, और योगेशजी चोपड़ा के हुए। अट्ठाइयां, लघुशांति तप, पर्युषण में छठ अट्ठम तप और नवपद ओलीजी में आराधकों ने भाग लिया।

पर्युषण महापर्व उत्साह के साथ सम्पन हुए। पू. चारुलताश्रीजी म.सा. ने बारसौ सूत्र का कंठस्थ वांचन किया।

पू. साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म. के 18 दिन की मौन जाप की पूर्णाहुति में मांगलिक का आयोजन किया गया। पू. चंपाश्रीजी म.सा. की 34वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष में तीन महापूजन- नाकोडा भैरव महापूजन, पार्श्व पद्मावती महापूजन, जयतिहुअण महापूजन के साथ मनाया गया। आसोज सुदि तेरस को १०८ गुरु इकतीसे का पाठ किया गया।

उदयपुर में श्री गौतमस्वामी प्रतिष्ठा संपन्न

उदयपुर 30 अक्टूम्बर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से उदयपुर स्थित श्री वासुपूज्य जिन मंदिर एवं श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी में परमात्मा महावीर के प्रथम गणधर गौतमस्वामी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कार्तिक शुक्ल 6 रविवार को अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

प्रतिमा भराने का लाभ नंदलालजी दुर्लभदेवी मुकेशजी मायाजी हर्षुल सिरोया परिवार ने लिया जबकि बिराजमान का लाभ राजभाई कपिलकुमार हेमन्तकुमार लोढा परिवार ने लिया।

इस अवसर पर पूजनीया साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म. ने गणधर गौतमस्वामी के समर्पण की व्याख्या करते हुए कहा- वे चार ज्ञान के स्वामी थे, पर परमात्मा महावीर के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित थे। यदि परमात्मा को प्राप्त करना है तो हमारे हृदय में गौतमस्वामी के समर्पण को प्रतिष्ठित करना होगा।

सादर श्रद्धांजली

रायपुर छत्तीसगढ निवासी श्रीमती रतनदेवी मनोहरमलजी भंसाली का ता. 14 अक्टूबर 2022 को स्वर्गवास हो गया। वे धर्ममाता के रूप में साधु-साध्वी भगवंतों की वैयावच्च में आगे रहती थी। आपके सुपुत्र श्री सुरेशजी भंसाली अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के राष्ट्रीय चेयरमेन हैं। सुपुत्र श्री अभयजी भंसाली वर्तमान में श्री ऋषभदेव जैन मंदिर ट्रस्ट के कार्याध्यक्ष हैं। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

मूल भाडली बाडमेर वर्तमान में बैंगलोर निवासी श्री मेवारामजी मालू का स्वर्गवास ता. 24 अक्टूबर 2022 को हो गया। गच्छ व शासन के प्रति समर्पित श्री मालूजी आगेवान श्रावक थे। उनके स्वर्गवास से गच्छ व संघ में बडी क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

मूल जोधपुर वर्तमान में जालोर निवासी श्रीमती कमलादेवी सुरेन्द्रमलजी पटवा का स्वर्गवास हो गया। वे जहाज मंदिर के वर्तमान ट्रस्टी श्री धर्मेन्द्रजी पटवा की मातुश्री थी। उनकी भावना के अनुसार परिवारजनों ने उनके देह को एम्स हॉस्पीटल में चिकित्सकीय अनुसंधान हेतु दान किया है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

दुर्ग निवासी वीरमाता श्रीमती राधादेवी कोठारी का ता. 13 अक्टूबर 2022 को स्वर्गवास हो गया। उनकी सुपुत्री खरतरगच्छ संघ में दीक्षित हैं। जो वर्तमान में पूजनीया साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म.सा. के नाम से संयम साधना कर रहे हैं। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

(शेष पृष्ठ 15 का)

मेरी मंगल कामना !

गुरुदेवश्री की प्रसन्नतामेरे मन में बहुत उत्सुकता थी, कब चातुर्मास पूरा हो और कब इनकी दीक्षा हो! चातुर्मास पूरा होते-होते दीक्षा का निर्णय हो गया। मुहूर्त्त आया- मिगसर वदि 2 का! पिताजी को नाम मिला- मुनि प्रतापसागर और मिश्रीमल का नाम रखा गया- मुनि मनोज्ञसागर! का पार नहीं था। मुझे आज भी याद है- उस समय मेरा और मुनि मनोज्ञसागर का संयुक्त फोटो खिंचवाकर गुरुदेवश्री ने उसकी प्रतियाँ जगह-जगह भिजवाई थी। उस फोटो के पीछे दोनों के नाम लिखे थे और लिखा था- राम लक्ष्मण की जोडी! मेरी दीक्षा के बाद मात्र चार महिने और 25 दिन बाद यह दीक्षा हुई थी। एक साथ गच्छ में मुनियों की इस वृद्धि ने संपूर्ण खरतरगच्छ संघ में मधुर लहर का संचार किया था।

हम दोनों मुनियों का नाम इस जोडी से प्रसिद्ध हो गया था। दोनों के हृदय में एक दूसरे के प्रति भ्रातृत्व भाव का झरणा बहता था। संयम ग्रहण की उस मूल्यवान घटना को आज 49 वर्ष पूरे हो रहे हैं। उसका संयम स्वर्णिम वर्ष के मंगल प्रभात में मंगल प्रवेश हो रहा है। इन 49 वर्षों में हुई उसकी प्रगति अनूठी है। उसने जिस प्रकार अजैनों में जैन धर्म के प्रति श्रद्धा का वातावरण निर्मित किया है, उसकी जितनी अनुमोदना की जाय, कम है। मारवाड के उस क्षेत्र में जहाँ साधु-साध्वियों का विचरण प्रायः अल्प होता है, उस क्षेत्र में भ्रमण कर समाज को धर्म से जोडने का उसका पुरुषार्थ रहा है।

ब्रह्मसर दादावाडी की महिमा के पीछे उसी की मेहनत है तो बकेला पार्श्वनाथ तीर्थ को जीवंत करने में उसका योगदान जरा भी कम नहीं है। उसने अपने मीठे व्यवहार और सतत भ्रमण से मालानी, वशीमालानी और भाटीपा क्षेत्र के रेगिस्तानी इलाके को धर्म की हरियाली से ओतप्रोत किया है। कितने ही क्षत्रिय परिवारों को शुद्ध शाकाहारी बनाने का पुरुषार्थ किया है।

संयमी जीवन के उसके 49 वर्ष इतिहास का अनूठा दस्तावेज है। इस पावन अवसर पर मेरी मंगल कामना है कि वह प्रगति के सोपानों पर सतत आरोहण करता हुआ अपने लक्ष्य-सिद्धि का साक्षात्कार करे।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर अत्यन्त क्रुद्ध होता हुआ डॉक्टर के पास पहुँचा।

बिना अनुमति के ही डॉक्टर की केबिन में जाकर जोर से बोला- डॉक्टर साहब! आपने यह क्या कर दिया!

डॉक्टर परेशान हो गया। सोचा उसने- क्या हुआ! जो इतना गुस्से में बोल रहा है। कहीं मेरी दवाई का कोई रिएक्शन तो नहीं हो गया।

डॉक्टर ने धीरज से पूछा- क्या हुआ भैया!

जटाशंकर बोला- आपकी दवाई जब से लेनी प्रारंभ की है, तब से मेरी बीमारी बढ़ती जा रही है।

डॉक्टर बोला- ऐसा हो ही नहीं सकता। तूं बता। दवाई बराबर ली!

जटाशंकर- बिल्कुल बराबर ली?

डॉक्टर- परहेज का पालन किया!

जटाशंकर ने कहा- बिल्कुल किया।

डॉक्टर- सिगरेट कम की।

जटाशंकर ने कहा- जैसा आपने कहा, वैसा ही किया। आपने मुझे पूछा था- सिगरेट कितनी पीते हो! मैंने कहा था- दस पीता हूँ।

डॉक्टर बोला- फिर मैंने क्या कहा था?

जटाशंकर बोला- आपने कहा था- मात्र भोजन करने के बाद ही सिगरेट पीना।

आपकी इस सूचना के कारण मैं बीमार पड गया। क्योंकि यों तो हमेशा मैं दो बार ही भोजन करता था। लेकिन आपने कहा कि भोजन करने के बाद ही सिगरेट पीना।

अब मुझे तो दस सिगरेट चाहिये। तो इस कारण मुझे रोजाना दस बार भोजन करना पडा। इस कारण मेरी तबियत बिगड गई। आपको इसका हर्जाना देना होगा।

यह मन की चालबाजी है। डॉक्टर का आशय सिगरेट कम करने का था, न कि भोजन बढ़ाने का। परन्तु व्यक्ति हमेशा अर्थ वह निकालता है, जो उसे पसन्द होता है।

जहाज मंदिर में गुरु सप्तमी का आयोजन

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट जहाज मन्दिर मांडवला में दिनांक 15.11.2022 मिगसर वदि 7 मंगलवार को प. पू. आचार्य भगवंत श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्य तिथि पर गुरुसप्तमी मेले का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर गुरु भक्ति, गुणानुवाद सभा आदि का आयोजन प.पू. व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. की सुशिष्याएं पूज्या साध्वी विनीतयशाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 की निश्रा में किया जाएगा।

इस पावन अवसर पर आप सभी की उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है, अत: आप सपरिवार अवश्य पधारे।

-सूरजमल देवड़ा धोका, मंत्री जहाज मन्दिर

गुरुमूर्ति अर्पण श्री विश्वासजी जैन

वधामणा श्री प्रकाशजी लोढ़ा द्वारा

सूरिमंत्र साधना मांगलिक समारोह

साधना सेवा में तत्पर श्रमण

विशिष्ट विधान गुरुदेवजी द्वारा

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

श्री आदिनाथाय नमः
अनंतलब्धिनिधानाय श्री श्री गौतमस्वामिने नमः
खरतरबिरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः
पू. गणनायक श्री सुखसागर–सद्गुरुभ्यो नमः

श्री जयपुर नगरे

श्री मोहनवाडी अरिहंत वाटिका मध्ये
गगनचुम्बी ऋषभदेव जिन प्रासाद एवं दादावाडी के
भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव उपाध्याय पद प्रदान महोत्सव एवं दीक्षा महोत्सव प्रसंगे

सकल श्री संघ को भावभरा ससम्मान आमंत्रण

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक मरूधर मणि
खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
पूज्य नमिउण तीर्थ प्रेरक आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म.सा. आदि ठाणा

पावन प्रेरणा

पूजनीया प्रवर्तिनी प्रवरा
श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. की शिष्या
पूजनीया मरूधर ज्योति श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा.

प्रतिष्ठा
वि. 2079
पौष वदि 3
रविवार
11 दिसम्बर 2022

निवेदक

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर

अरिहन्त वाटिका, मोहनबाड़ी, गलता गेट चौराहा, दिल्ली बाईपास, जयपुर-302003
फोन : 0141-2640123, मो. 9530179959

संघ अध्यक्ष	संघ मंत्री	संयोजक
प्रकाशचंद लोढा	देवेन्द्रकुमार मालू	विमलचंद सुराणा

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 096496 40451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक श्रीमती पुष्पा ए. जैन द्वारा श्री एस. कम्प्यूटर सेन्टर, हनुमानजी मंदिर के सामने वाली गली, जालोरी गेट जोधपुर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, माण्डवला, जि जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीमती पुष्पा ए. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408